RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर

श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज

श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी

तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-11 अंक:306 ता. 01 जून 2023, गुरूवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

बृजभूषण Vs रेसलर्स केस में नया मोड़

पॉस्को एक्ट का केस दर्ज कराने वाली पहलवान के बालिग होने का दावा; पिता नाबालिग होने पर अड़े

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह और रेसलर्स विनेश फोगाट, साक्षी मलिक व बजरंग पूनिया केस में नया मोड़ आ गया है। सूत्रों के मुताबिक, बृजभूषण पर पॉस्को एक्ट का केस दर्ज करवाने वाली पहलवान बालिग निकली है। ये पहलवान रोहतक की रहने वाली है। उसके स्कूल से मिले बर्थ सर्टिफिकेट के आधार पर उसके बालिग होने की पुष्टि हुई है। इसकी जांच के लिए दिल्ली पुलिस की टीम रोहतक आई थी। हालांकि उसके पिता ने इसे गलत करार दिया है। उनका दावा है कि उनकी बेटी नाबालिग है।

पिता के दावे और उन पर उठ रहे सवाल-नाबालिग लड़की के पिता ने कहा- 16 साल की उम्र में बेटी का रांची में शिविर के दौरान बृजभूषण ने शोषण किया था। उनकी बेटी दिसंबर 2023 में 17 साल की होगी। हालांकि रांची शिविर डेढ़-दो साल पहले हुआ था। ऐसे में सवाल है कि तब उनकी बेटी 16 साल की थी तो 2 साल बाद भी 18 साल की कैसे नहीं हुई?। पिता ने कहा कि मेरी 2 बेटियां और 1 बेटा था। बड़ी बेटी की 2 साल की उम्र में मौत हो गई। दूसरी बेटी का नाम उन्होंने बड़ी बेटी के नाम पर ही रखा। वह अब भी नाबालिग है और रेसलिंग करती है। हालांकि उसका डेथ सर्टिफिकेट कहां है?, इसके बारे में पिता स्पष्ट जवाब नहीं दे पा रहे हैं। रोहतक में नाबालिग पहलवान के चाचा मीडिया के सामने आए। उन्होंने कहा कि बृजभूषण पर केस दर्ज करवाने वाली उनकी पहलवान भतीजी नाबालिग नहीं है। उन्होंने लड़की के जन्म से जुड़े प्रूफ भी दिखाए। चाचा ने कहा कि सरकारी नौकरी का लालच देकर उनकी भतीजी से इस तरह के आरोप लगवाए गए हैं। हालांकि लड़की के पिता का कहना है कि वह लड़की का चाचा नहीं बल्कि ताऊ है। वह बड़ी बेटी के दस्तावेज दिखा रहा है।

देश के मुसलमानों की हालत दलितों जैसी, यूएसए में बोले राहुल गांधी; बयान पर फिर मचा बवाल

राहुल ने कहा कि आज भारत में जो मुसलमानों के साथ हो रहा है, वैसा दलितों के साथ 80 के दशक में होता था। भारत में 80 के दशक में दिवंगत इंदिरा गांधी की अगुवाई वाली कांग्रेस की ही सरकार थी।

सैन फ्रांसिस्को। अमेरिका पहुंचे कांग्रेस नेता राहुल गांधी भारतीय जनता पार्टी पर जमकर बरसे। उन्होंने सरकार पर मुसलमानों की हालत 'दलितों जैसी' करने के आरोप लगा दिए। सैन फ्रांसिस्को में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने भारत जोड़ो यात्रा का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सरकार की तरफ से यात्रा को रोकने की कोशिश की गई थी। राहुल ने कहा कि आज भारत में जो मुसलमानों के साथ हो रहा है, वैसा दलितों के साथ 80 के दशक में होता था। उन्होंने कहा कि इस चुनौती से लड़ना होगा। खास बात है कि भारत में 80 के दशक में दिवंगत इंदिरा गांधी की अगुवाई वाली कांग्रेस की ही सरकार थी। वह चार जून तक अमेरिका की यात्रा पर रहेंगे। इससे पहले राहुल ने भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर संसाधनों पर नियंत्रण और केंद्रीय एजेंसियों के गलत इस्तेमाल के भी आरोप लगा दिए। खास बात है कि ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी में भी इसी मुद्दे पर भाजपा सरकार को घेरा था।

भाजपा ने उठाए सवाल

कांग्रेस नेता राहुल के इस बयान पर अब भारत में राजनीति तेज हो गई है। भाजपा ने राहुल पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अपमान के आरोप लगाए हैं। हरियाणा सरकार में मंत्री अनिल विज ने कहा, दुनिया भर के देशों के नेता हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते नहीं थकते और हमारे देश का एक अदना सा नेता राहुल गांधी विदेशी धरती पर जाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपमानित करता है। ऐसे नेता का हर भारतवासी को बहिष्कार करना चाहिए।

राहुल के समर्थन में विपक्ष

इधर, विपक्ष के नेता राहुल के समर्थन में आने लगे हैं। शिवसेना (उद्धव बालासाहब ठाकरे) नेता और राज्यसभा सांसद संजय राउत ने कहा कि कांग्रेस नेता ने कुछ भी गलत नहीं कहा है। उन्होंने कहा कि राहुल ने देश के मुद्दे ही उठाए हैं। राउत ने कहा, देश में राजनीति करना बहुत भयावह हो गया है।

राहुल ने कहा कि आज भारत में जो मुसलमानों के साथ हो रहा है, वैसा दलितों के साथ 80 के दशक में होता था। उन्होंने कहा कि इस चुनौती से लड़ना होगा। खास बात है कि भारत में 80 के दशक में दिवंगत इंदिरा गांधी की अगुवाई वाली कांग्रेस की ही सरकार थी। वह चार जून तक अमेरिका की यात्रा पर रहेंगे। इससे पहले राहुल ने भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर संसाधनों पर नियंत्रण और केंद्रीय एजेंसियों के गलत इस्तेमाल के भी आरोप लगा दिए।

बिहार, कर्नाटक, केरल समेत 25 ठिकानों पर एनआईए की रेड

कटिहार में पीएफआई नेता के यहां छापेमारी; फुलवारीशरीफ मामले में हो रही पूछताछ

पटना। पीएफआई के फुलवारीशरीफ मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने बिहार, कर्नाटक और केरल में करीब 25 ठिकानों पर रेड मारी है। एनआईए की टीम ने कटिहार के हसनगंज थाना क्षेत्र के मुजफ्फर टोला में लगभग 3 घंटे तक छापेमारी की। एनआईए की टीम ने नासिर हुसैन के घर कई दस्तावेज को खंगाला। वहीं, स्थानीय लोगों की माने तो एनआईए पूछताछ के लिए महबूब आलम नदवी के भाई मोहम्मद जावेद को अपने साथ ले गई है। हालांकि आधिकारिक रूप से अब तक इसकी कोई पुष्टि नहीं है। साजिश से जुड़े संदिग्धों के ठिकानों पर NIA की रेड चल रही है। इससे पहले इस मामले में छह लोगों को गिरफ्तारी हुई थी। पीएफआई से संबंधित कई आपत्तिजनक दस्तावेज जब्त किए गए थे। इसे लेकर पिछले साल 12 जुलाई को पटना के फुलवारीशरीफ पुलिस स्टेशन में केस दर्ज किया गया था। इस साल 4-5 फरवरी को, एनआईए ने बिहार के मोतिहारी में आठ जगहों पर भी रेड मारी थी। दो

लोगों को गिरफ्तार किया था। जिन्होंने हत्या को अंजाम देने के लिए हथियार और गोला-बारूद की व्यवस्था की थी। गिरफ्तार लोगों की पहचान तनवीर रजा उर्फ बरकती और मोहम्मद आबिद उर्फ आर्यन के रूप में हुई।

जहां साक्षी को मारा उस गली में साहिल को लेकर पहुंची पुलिस, क्राइम सीन हुआ रीक्रिएट

पुलिस साहिल को उस गली में लेकर गई थी जहां साक्षी को चाकू से गोद-गोद कर मौत के घाट उतारा गया था। पुलिस ने भयानक कत्ल के पूरे सीन को रीक्रिएट किया है। यह पुलिस की जांच का अहम हिस्सा बताया जा रहा है।

नई दिल्ली। दिल्ली में साक्षी की हुई हत्या के बाद पुलिसिया तफ्तीश जारी है। पुलिस ने शाहबाद डेरी इलाके में क्राइम सीन को रीक्रिएट किया है। पुलिस साहिल को लेकर शाहबाद डेरी इलाके के उस गली में गई थी जहां साक्षी को चाकू से गोद-गोद कर मारा गया था। माना जा रहा है कि साक्षी मर्डर केस में पुलिस ने पूरी क्राइम सीन को इसलिए रीक्रिएट किया है क्योंकि यह जांच का अहम हिस्सा है। सुबह 4 बजे पुलिस ने शाहबाद डेरी में जाकर

क्राइम सीन रीक्रिएकट किया है। इस दौरान पुलिस साहिल को भी घटनास्थल पर लेकर गई थी और उसके सामने ही पूरी वारदात के सीन को दोहराया गया है। इधर साक्षी की हत्या से ठीक 2 मिनट पहले का एक और वीडियो भी सामने आया है। इस वीडियो में साक्षी अकेली जाती नजर आ रही है। इस वीडियो में नजर आ रहा है कि एक भीड़-भाड़ वाली सड़क से साक्षी अकेले गुजर रही है। सुरक्षा कारणों की वजह से पुलिस बुधवार की अहले सुबह क्राइम सीन रीक्रिए करने पहुंची थी। साहिल ने साक्षी को कैसे मारा? कहां वो साक्षी का इंतजार कर रहा था? ऐसे कई गंभीर सवालों को समझने के लिए पुलिस ने साक्षी मर्डर केस का सारा सीन रीक्रिएट किया है। माना जा रहा है कि पुलिस की इस मशक्कत के बाद जांच

लखनऊ में हादसा

स्कॉर्पियो में फंसकर 100 मीटर घिसटते रहे पति-पत्नी और 2 बच्चे, चारों की मौत

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में देर रात अलीगंज की गुलाचीन मंदिर के पास सड़क हादसा हो गया। इस दर्दनाक सड़क हादसे में स्कॉर्पियो में फंसकर दंपति और दो बच्चे करीब 100 मीटर तक घिसटते रहे। हादसे में चारों की मौत हो गई। हादसे के बाद मौके भीड़ जमा हो गई। मिल रही जानकारी के मुताबिक गुलाचीन मंदिर के पास टेढ़ी पुलिया की ओर से आ रही स्कॉर्पियो ने स्कूटी में टक्कर मार दी। टक्कर के बाद स्कूटी सवार दंपति और दो बच्चे स्कॉर्पियो के निचले हिस्से में फंस

गए। स्कॉर्पियो करीब 100 मीटर उनको घिसटते रही। इससे बुरी तरह जख्मी हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आनन-फानन स्कॉर्पियो में फंसे दंपति और दोनों बच्चों को निकलवा कर ट्रामा सेंटर भिजवाया। केजीएमयू ट्रामा सेंटर में डॉक्टरों ने चारों को मृत घोषित कर दिया। हालांकि चारों की शिनाख्त नहीं हो सकी।

पुंछ में एलओसी के पास 3 घुसपैठिए पकड़े, 10 किलो आईईडी, एके-47 समेत भारी मात्रा में हथियार और ड्रग्स बरामद

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के करमारहा सेक्टर में LOC के पास भारतीय सेना ने तीन आतंकवादियों को पकड़ा। ये तीनों 30 मई की रात खराब मौसम और बारिश का फायदा उठाकर भारतीय सीमा में घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। सेना के जवानों ने फेंसिंग क्रॉस कर रहे तीनों आतंकियों पर फायरिंग की।

सेना ने इनके पास 10 किलो IED, एके-47 समेत भारी मात्रा में हथियार और ड्रग्स बरामद किया है। फायरिंग में घायल एक आतंकवादी का पुंछ के हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है।

पुंछ के गुलपुर इलाके में करमारा गांव में नियंत्रण रेखा पर सेना ने संदिग्ध

गतिविधि देखी। इसके बाद रात करीब 4 बजे जवानों ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया। सेना की तरफ से एक्शन देख आतंकियों ने गोलीबारी शुरू कर दी, जवाबी फायरिंग में एक घुसपैठिए को पैर में गोली लगी। फायरिंग में सेना का एक जवान भी घायल हुआ है।

करमारा के रहने वाले हैं तीनों आतंकी

घुसपैठियों की पहचान मोहम्मद फारूक (26), मोहम्मद रियाज (23) और मोहम्मद जुबैर (22) के रूप में हुई है। सभी करमारा के निवासी हैं। फारूक के पैर में गोली लगी है। सेना के मुताबिक इन तीनों को बॉर्डर पार से हथियार और ड्रग्स की खेप मिली थी। वे इसकी तस्करी करने की कोशिश कर रहे थे, तभी सैनिकों ने उन्हें रोक लिया।

इनके पास एके राइफल, दो पिस्टल, छह ग्रेनेड, प्रेशर कुकर में रखा एक इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) और हेरोइन के 20 पैकेट बरामद हुए हैं।

पिछले महीने भी घुसपैठ करते 4 आतंकी मारे थे

बारामूला में वनिगम पायीन क्रेरी इलाके में सुरक्षा बलों ने गुरुवार को 2 आतंकवादियों को ढेर कर दिया था। यह पुलिस और सेना का जॉइंट ऑपरेशन था। जिसे 29RR, सेंट्रल रिजर्व पुलिस और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने मिलकर चलाया। आतंकियों के पास से 1 AK-47, 1 पिस्टल और गोला बारूद बरामद किया था। इससे ठीक एक दिन पहले भी माछिल सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश को नाकाम किया था। इस ऑपरेशन में भी दो आतंकवादियों को ढेर किया गया था। आतंकियों ने नियंत्रण रेखा के पास से घुसपैठ की कोशिश की थी।

अगले 4 दिनों तक 10 राज्यों में होगी बारिश, 11 दिन से रुका मानसून आगे बढ़ा, दिल्ली में 5 डिग्री कम दर्ज हुआ पारा

नई दिल्ली। पिछले 11 दिनों से रुका मानसून बंगाल की खाड़ी में आगे बढ़ा है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, दिल्ली समेत 10 राज्यों में हल्की से भारी बारिश होने के आसार हैं। केरल में आमतौर पर मानसून एक जून के आसपास पहुंच जाता है और जुलाई मध्य तक पूरे देश को कवर कर लेता है। इस साल केरल में मानसून की शुरुआत में थोड़ी देरी होने की संभावना है। इधर, दिल्ली में मंगलवार को अधिकतम तापमान औसत से पांच डिग्री नीचे दर्ज किया गया है।

दिल्ली में बुधवार को भी बारिश की संभावना

दिल्ली में मौसम विभाग ने बुधवार को भी आंशिक रूप से बादल छाए रहने और हल्की बारिश व गरज के साथ तेज हवा चलने का अनुमान जताया है। मंगलवार शाम अचानक बारिश और आंधी आई। इस दौरान हवाओं की गति 70 से 80 किमी प्रति घंटा रही। अलग-अलग इलाकों में करीब एक घंटे तक यही स्थिति रही। सड़क पर राहगीर बचने के लिए इधर-उधर दौड़ने भागने लगे। वाहनों की आवाजाही भी प्रभावित हुई। सोमवार से मंगलवार सुबह 8.30 बजे तक बीते 24 घंटों में शहर में 1.2 मिमी बारिश दर्ज की गई। पढ़ें

बिहार में अगले 5 दिन रहेगी गर्मी, 14 जून तक आएगा मानसून

बिहार में अगले 5 दिन शुष्क मौसम रहेगा। बारिश की कोई संभावना नहीं है। तापमान 40 डिग्री से ऊपर जा सकता है। भारतीय मौसम विभाग के वैज्ञानिक आशीष कुमार ने बताया, मानसून 13-14 जून तक बिहार में प्रवेश कर सकता है। इस बार राज्य में सामान्य से कम बारिश होने की संभावना है।

3 जून तक जयपुर में बादल छाए रहेंगे

मौसम विभाग के अनुसार 3 जून तक जयपुर में बादल छाए रहने और बारिश के आसार हैं। पश्चिमी विक्षोभ के असर से मंगलवार को जयपुर में दिनभर बादल छाए रहे। दोपहर बाद कुछ देर के लिए धूप खिली, लेकिन बारिश नहीं हुई। इसके असर से दिन का तापमान सामान्य से 8.8 डिग्री नीचे चला गया। जबकि रात का तापमान सामान्य से 3.8 डिग्री कम दर्ज हुई। यहां अधिकतम तापमान 32.0 और न्यूनतम तापमान 23.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। अब बुधवार को आकाश में बादल छाए रहने की संभावना है। तापमान में अधिक बढ़ोतरी के आसार नहीं है। इसलिए अभी लोगों को गर्मी से राहत मिलती रहेगी।

उग्रवादियों ने दी धमकी, मारपीट कर जलाई पोकलेन मशीन

टंडवा । रेलवे निर्माण कार्य को रोकने के बाद उग्रवादियों ने कर्मचारियों को बंधक बनाकर मारपीट की। इसके साथ ही उन्होंने चेतावनी भी दी है। जानकारी के अनुसार तृतीय सम्मेलन प्रस्तुति कमेटी (टीएसपीसी) उग्रवादियों ने मंगलवार की मध्य रात्रि टंडवा थाना क्षेत्र में जमकर आतंक मचाया। उग्रवादियों ने शिवपुर-कठौतिया रेलवे निर्माण कार्य में लगी पोकलेन को फूंक दिया। इतना ही नहीं, उग्रवादियों ने निर्माण कार्य से जुड़े पांच कर्मियों को जमकर पिटाई की। वारदात से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। जानकारी के अनुसार एक दर्जन हथियार बंद उग्रवादी बैधविघा-फुलवरिया निर्माणकार्य स्थल पहुंचे और कर्मियों को अपने कब्जे में लेकर मशीन में डीजल छिड़क कर आग लगा दी। घटना को अंजाम देने के उपरांत बदमाश फरार हो गए। इस दौरान संगठन के सबजोनल कमेटी की ओर से एक हस्तलिखित पर्चा छोड़ा गया है। पर्चा में जमीन दलाल, कोल माफिया, एनटीपीसी ट्रांसपोर्टरों समेत अन्य निर्माण एजेंसियों को चेताया गया है। जानकारी के अनुसार पर्चे के माध्यम से उग्रवादियों ने कहा कि संगठन के बगैर अनुमति के कार्य किया तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहें। इस दौरान उग्रवादियों ने आईएससी प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड के कंपनी का (पोकलेन) मशीन को आग के हवाले किया है। बदमाशों की पिटाई से घायल हुए वर्करों का टंडवा अस्पताल में इलाज चल रहा है। सूचना पर घटना के बाद एसडीपीओ शंभूनाथ सिंह, पुलिस इंस्पेक्टर विजय सिंह दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और मौके का जायजा लिया है। इधर, उग्रवादियों की धर पकड़ को लेकर पुलिस की टीम छापामारी कर रही है।

60 करोड़ की लागत से तैयार होगा डिजिटल कुंभ म्यूजियम

लखनऊ । आगामी दिनों में प्रयागराज में एक डिजिटल कुंभ म्यूजियम तैयार होने जा रहा है। दरअसल दो साल बाद 2025 में होने वाले महाकुंभ की तैयारियों को लेकर पर्यटन विभाग ने इस बार डिजिटल कुंभ म्यूजियम का निर्माण करने का निर्णय किया है। इसके निर्माण को लेकर 60 करोड़ रुपये का प्रस्ताव सरकार को भेजा है। पर्यटन विभाग की तरफ से महाकुंभ को लेकर विभिन्न धार्मिक स्थलों के विकास पर 300 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार डिजिटल कुंभ म्यूजियम में देश और प्रदेश की संस्कृति के अलावा महाकुंभ के पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व के भी दर्शन हो सकेंगे। यह अत्याधुनिक जब तैयार होगा तो म्यूजियम हीटिंग वेंटीलेशन एंड एयरकंडीशनिंग व आडियो-वीडियो रूम की सुविधा से युक्त होगा। इसमें विभिन्न आध्यात्मिक दर्शन वाली गैलरी भी होंगी, जिनमें स्पिरिचुएल व कुंभ मेला, इंटरप्रेटेशन गैलरी, समुद्र मंथन गैलरी और अखाड़ा गैलरी शामिल है। इसमें कल्चरल हाट (अक्षयवट), म्यूजियम, गैलरी व थिएटर (अमृत कलश) के साथ ही गेस्ट हाउस जैसी सुविधाएं भी होंगी। प्रवेश द्वार में डिजिटल प्रोजेक्शन के जरिए संगम को दर्शाया जाएगा। इसमें तीन नदियों (गंगा, यमुना और सरस्वती) को तीन अलग रंगों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा, जो एनिमेटेड फैक्टल ज्योमेट्री आधार पर होगा। इसके अलावा स्टेटिक ग्राफिक का भी प्रयोग होगा। यहां बनने वाली इंटरप्रिटेशन गैलरी में प्रयागराज के नक्शे को बड़ी स्क्रीन पर प्रेजेंट किया जाएगा। समुद्र मंथन गैलरी में फ्लोर प्रोजेक्शन के माध्यम से समुद्र मंथन की प्रस्तुति दी जाएगी। अखाड़ा गैलरी में देश के अखाड़ा कल्चर को दिखाया जाएगा। इसके अलावा पर्यटन विभाग की तरफ से महाकुंभ को लेकर विभिन्न धार्मिक स्थलों के विकास पर 300 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। इनमें भारद्वाज आश्रम, द्वादस माधव मंदिर, नागवासुकी मंदिर, दशाश्वमेध मंदिर, मनकामनेश्वर मंदिर, अलोपशंकरी मंदिर, पडिला महादेव मंदिर, पंचकोशी परिक्रमा पथ लर आने वाले मंदिर, कोटेश्वर महादेव, कल्याणी मंदिर का सौंदर्यीकरण किया जाएगा।

तंबाकू उत्पादों का इस्तेमाल करने वालों में 10वीं पास छात्रों की संख्या अधिक

नई दिल्ली । वल्लभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट ने हाल ही में एक सर्वे किया है। जिसमें खुलासा हुआ है कि तंबाकू उत्पादों का इस्तेमाल करने में 10वीं पास छात्रों की संख्या सबसे अधिक थी। उन्हें इस वर्ष 30 अप्रैल तक कुल 71,39,473 आईवीआर कॉल प्राप्त हुए थे, जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला। इंस्टीट्यूट के मुताबिक, 30 अप्रैल 2023 तक केंद्र द्वारा प्राप्त आईवीआर कॉल की कुल संख्या में से 20,43,227 कॉलों की काउंसलिंग की गई, जिनमें 9,96,302 इनबाउंड कॉल, 26,80,657 आउटबाउंड कॉल और 3,91,160 कॉल सेंटर द्वारा पंजीकृत थीं। कुल 1,56,644 लोगों ने सफलतापूर्वक तंबाकू का सेवन छोड़ दिया है। संस्थान के मुताबिक, आंकड़ों से पता चला है कि इनमें से अधिकांश कुल 1,23,508 कॉलें उत्तर प्रदेश से आईं। डेटा दिखाता हैं कि पुरुष 98 प्रतिशत, उसके बाद ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की कुल आबादी का 5 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं में सबसे कम प्रतिशत शामिल है। तंबाकू के उपभोक्ताओं में सबसे अधिक संख्या 1,74,097 व्यक्तियों की है, जिन्होंने 10वीं कक्षा पास की है।

श्रृंगार गौरी की नियमित पूजा मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट का बड़ा फैसला, हिंदू पक्ष की याचिका को सुनवाई लायक

प्रयागराज । ज्ञानवापी मामले में बुधवार को हिंदू पक्ष की बड़ी जीत हुई है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ज्ञानवापी परिसर में मौजूद श्रृंगार गौरी/देवताओं की मूर्तियों की नियमित पूजा अर्चना के अधिकार की मांग वाली हिंदू पक्ष की याचिका को सुनवाई लायक माना। इसके साथ ही कोर्ट ने मस्जिद कमेटी की याचिका को खारिज कर दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट से अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी को बड़ा झटका लगा है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भी मुस्लिम पक्ष की आपत्ति खारिज कर दी है। हाईकोर्ट के फैसले के बाद नियमित पूजा की मांग वाली अर्जी पर सुनवाई का रास्ता साफ हो गया है। अब केस में जिला कोर्ट वाराणसी श्रृंगार गौरी के नियमित पूजा की मांग वाली याचिका पर सुनवाई करेगी। जस्टिस जे जे मुनीर की सिंगल बेंच ने बुधवार को ये फैसला सुनाया। बता दें कि अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी ने जिला जज वाराणसी के फैसले को चुनौती दी थी। श्रृंगार गौरी केस में राखी सिंह व 9 अन्य द्वारा वाराणसी की अदालत में सिविल वाद दाखिल किया गया था। इस मुकदमे में अपनी आपत्ति खारिज होने के खिलाफ मस्जिद की इंतजामियां कमेटी ने हाईकोर्ट में अर्जी दाखिल की थी। अर्जी में वाराणसी के जिला जज की अदालत से 12 सितंबर को आए फैसले को चुनौती दी गई थी। अदालत में वाद दाखिल करने वाली 5 महिलाओं सहित 10 लोगों को पक्षकार बनाया गया था। वाराणसी के जिला जज की कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष द्वारा दाखिल की गई आपत्ति को पहले ही खारिज कर दिया था। मुस्लिम पक्ष ने दलील दी थी कि 1991 के प्लेसिस आफ वरशिप एक्ट और 1995 के सेंट्रल वक्फ एक्ट तहत सिविल वाद पोषणीय नहीं है।

2,000 रुपये के नोट बंद होने से देश में नकली नोट बनाने का धंधा ठप्प

नई दिल्ली । आरबीआई ने कहा है कि 2,000 रुपये के नोट वापस लेने से नकली नोट बनाने का धंधा ठप्प हो रहा है। गौरतलब है कि देश में बड़े मूल्य वर्ग के नकली नोट एक बड़ी समस्या रही है लेकिन इनकी संख्या में अब गिरावट आ रही है। भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट में यह बात कही गई है। हालांकि 2000 के नोटों को सर्कुलेशन से वापस लेने के बाद ज्यादातर लोगों को लगता है कि आरबीआई के इस कदम से नकली नोटों के काले धंधे पर रोक लगेगी। भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्ष की तुलना में वित्तीय वर्ष 2022-23 में बैंकिंग सिस्टम द्वारा पकड़े गए 2,000 रुपये के नकली नोटों की संख्या 28प्र. घटकर 9,806 नोट रह गई। हालांकि, इसी अवधि में 500 मूल्यवर्ग के नकली नोटों की संख्या 14.6प्र. बढ़कर 91,110 नग हो गई है। बैंकिंग सेक्टर में पकड़ी गई नकली भारतीय मुद्रा नोटों की कुल संख्या पिछले वित्तीय वर्ष में 2,30,971 नोटों की तुलना में 2022-23 में घटकर 2,25,769 नोट रह गई। इससे पहले 2021-22 में यह संख्या बढ़ गई थी। 2022-23 के लिए आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट में 20 रुपये के मूल्यवर्ग में पाए गए नकली नोटों में 8.4प्र. की वृद्धि और 500 रुपये (नए डिजाइन) मूल्यवर्ग में 14.4प्र. की वृद्धि पर हुई। दूसरी ओर, 10 रुपये, 100 रुपये और 2,000 रुपये के नकली नोटों में क्रमशः 11.6न्न, 14.7प्र. और 27.9प्र. की गिरावट आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2022-23 के दौरान बैंकिंग क्षेत्र में पाए गए कुल नकली नोटों में से 4.6प्र. की पहचान रिज़र्व बैंक में की गई, जबकि शेष 95.4प्र. की पहचान अन्य बैंकों में की गई। देश में कुल नोटों के सर्कुलेशन में नकली नोटों की हिस्सेदारी सिर्फ 0.00016प्र. है।

मणिपुर हिंसा: शांति बहाल करने की कोशिश में जुटे अमित शाह, विभिन्न प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात जारी

कोलकाता (एजेंसी)। मणिपुर हिंसा ने एक बार फिर से देश की चिंता बढ़ा दी हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी मणिपुर दौर पर हैं। वह लगाता विभिन्न प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात कर रहे हैं। वह लोगों से शांति बनाए रखने की भी अपील कर रहे। मैतेई समुदाय द्वारा अनुसूचित जनजाति (एसटी) के दर्जे की मांग के विरोध में तीन मई को पर्वतीय जिलों में 'आदिवासी एकजुटता मार्च' के आयोजन के बाद मणिपुर में भड़की जातीय हिंसा में 75 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। हजारों लोग विस्थापित हुए हैं।

अमित शाह की बैठक

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को मणिपुर में भारत-म्यांमार सीमावर्ती शहर मोरेह का दौरा किया और सुरक्षा उपायों की समीक्षा करने के अलावा कुकी नागरिक समाज समूहों से मुलाकात की। उन्होंने मोरेह में रहने वाले तमिल व्यापारियों सहित विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की। अमित शाह ने सोमवार रात मणिपुर पहुंचने के तुरंत बाद, मैतेई-कुकी जातीय हिंसा के पीड़ितों के लिए अनुग्रह राशि और नौकरियों सहित एक मुआवजे के पैकेज को मंजूरी दी और बढ़ती कीमतों की जांच के लिए राज्य को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति का आदेश दिया। अमित शाह ने मंगलवार को विभिन्न मेइती और कुकी समूहों से मुलाकात की, जिन्होंने शांति के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की और आश्वासन दिया कि वे संकटग्रस्त राज्य में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए काम करेंगे।

मणिपुर में शांति सर्वोच्च प्राथमिकता

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता मणिपुर में शांति और समृद्धि है और उन्होंने सुरक्षा अधिकारियों को शांति भंग करने वाली किसी भी गतिविधि से कड़ाई से निपटने का निर्देश दिया है। शाह ने इंफाल में पुलिस, सीएपीएफ, सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मणिपुर में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के बाद यह बात कही। उन्होंने साफ तौर पर कहा है कि मणिपुर की शांति और समृद्धि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है, उन्हें शांति भंग करने वाली किसी भी गतिविधि से कड़ाई से निपटने का निर्देश दिया।

एन बीरेन सिंह की अपील

सीएम एन बीरेन सिंह ने बुधवार को एक बयान जारी कर लोगों से कानून और व्यवस्था का पालन करने की अपील की। सिंह ने अपने बयानों में उल्लेख किया कि बड़ी संख्या में स्थानों पर, जनता कर्फ्यू प्रतिबंधों का उल्लंघन कर रही है और सड़कों को अवरुद्ध कर रही है और राहत सामग्री और सुरक्षा कर्मियों की आवाजाही में भारी बाधा उत्पन्न कर रही है। उन्होंने अपने राज्य के लोगों से अपील की है कि वे सुरक्षाकर्मियों और राहत सामग्री की मुक्त आवाजाही में रुकावटें न पैदा करें।

पहलवानों के समर्थन में ममता बनर्जी ने निकाली रैली, कहा- इस लड़ाई में हम आपके साथ हैं

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर तीन दिन संसद भवन के उद्घाटन के वक्त मार्च करने की कोशिश करने पर पहलवानों के साथ कथित मारपीट के विरोध में बुधवार को सड़कों पर उतरीं। विश्व कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर प्रदर्शन कर रहे पहलवानों के समर्थन में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कोलकाता में हाजरा से रवींद्र सदन तक एक रैली निकालते हुए कहा कि हमें अपने पहलवानों पर गर्व है।

पहलवानों के समर्थन में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हाजरा मोड़ से रवींद्र सदन तक रैली निकाली। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि हमारी एक टीम पहलवानों से मुलाकात करने जाएगी और उन्हें समर्थन देगी। हम आपके साथ हैं इसलिए आज हमने यह रैली निकाली है। कल भी इसे जारी रखा जाएगा। पहलवान हमारे देश के गौरव हैं। आपकी लड़ाई में हम आपके साथ हैं। इससे पहले डब्ल्यूएफआईप्रमुख और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के बयान पर कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि उनके पीछे सरकार, सतारुढ़ पार्टी और मोदी का बल है। मोदी के बल पर इन्होंने हमारी मां और बहनों के साथ जो यौन शोषण किया है, उसकी परवाह नहीं करते। हमारी बहन-बेटियां वैश्विक मंच पर ताकत दिखाकर हमारे देश को गौरान्वित करते हैं...आज जब उन बेटियों ने बेइज्जती के कारण आंदोलन छेड़ा, तब बेइज्जत करने वालों का पक्ष लेकर और सभी शिकायतों की धज्जियां उड़ाते हुए ये हमारी बेटियों का अपमान कर रहे हैं।

बृजभूषण शरण को लेकर साधु-संत और खाप पंचायतें आमने-सामने

भाजपा सांसद को अयोध्या के साधु-संतों का पूरा समर्थन

लखनऊ (एजेंसी)। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह और देश के शीर्ष पहलवानों के बीच चल रही लड़ाई अब अयोध्या के संतों और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के खाप नेताओं के बीच की जंग बनती जा रही है। हरियाणा की खाप और राकेश टिकैत के नेतृत्व वाले पश्चिमी यूपी के किसान संगठनों ने डब्ल्यूएफआई प्रमुख द्वारा कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ आंदोलन कर रहे पहलवानों को अपना समर्थन दिया है। बीकेयू प्रमुख नरेश टिकैत ने पहलवानों को गंगा में अपने पदक नहीं विसर्जित करने के लिए राजी कर लिया। इस बीच, अयोध्या के प्रमुख संत ने कहा कि खापों और किसान संगठनों का मुकाबला करने के लिए बृजभूषण के पास एकमात्र विकल्प अयोध्या के संतों का समर्थन जुटाना है। सिंह का अयोध्या, इसके संतों और राम मंदिर आंदोलन के साथ काफी जुड़ाव है। सिंह का समर्थन करने वाले संत यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम में संशोधन की भी मांग कर रहे हैं। दरअसल बृजभूषण अयोध्या में ही साकेत पीजी कॉलेज के छात्र संघ के महासचिव बने और फिर हनुमान गढ़ी मंदिर के पुजारियों की चौकस

निगाहों में कुश्ती का अभ्यास करते हुए राजनीति की मुख्यधारा में आए।

संतों ने 5 जून को अयोध्या के रामकथा पार्क में बृजभूषण की जन चेतना महा रैली के लिए पूरा समर्थन देने का वादा किया है। रैली में अयोध्या के मणि राम दास छावनी पीठ के फॉलोअर्स भी शामिल हो रहे हैं, जो वाराणसी, हरिद्वार और मथुरा में हैं।

महंत दास ने कहा, बृजभूषण की जड़ें अयोध्या में गहराई तक फैली हुई हैं। कॉलेज के दिनों से लेकर राजनीति और राम मंदिर आंदोलन तक, उन्होंने अपने जीवन का एक लंबा हिस्सा अयोध्या में बिताया है। वह तब स्थानीय निवासी थे और संतों, साधुओं के साथ निकटता से जुड़े थे। उन्होंने कहा, अयोध्या में बृजभूषण का दबदबा ऐसा है कि विभिन्न गुटों के संत उनका समर्थन करने के लिए एक मंच पर आ गए हैं। सिंह के खिलाफ सभी आरोप राजनीति से प्रेरित और फर्जी हैं। हम उन लोगों के खिलाफ जांच और कार्रवाई की मांग करते हैं जो इसके लिए जिम्मेदार हैं।

महंत कमल नयन श्री राम जन्मभूमि तीरथ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास के उत्तराधिकारी हैं। पॉक्सो एक्ट में संशोधन की अपनी मांग को दोहराकर महंत ने कहा, पोक्सो एक्ट का दुरूपयोग कर निर्दोष लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा है। उनके खिलाफ झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं, खासकर संतों, महंतों और राजनेताओं पर। इसमें संशोधन होना चाहिए। यह मांग अकारण नहीं है।

इस बीच, राम मंदिर आंदोलन के केंद्र अयोध्या के कारसेवकपुरम में वीएचपी कैडर भी बृज भूषण की 5 जून की रैली के लिए समर्थन जुटा रहे हैं। वीएचपी के एक पदाधिकारी ने कहा, बृजभूषण शरण की रैली के लिए संगठन (वीएचपी) की ओर से कोई निर्देश नहीं है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह राम मंदिर आंदोलन से उनके करीबी जुड़ाव के कारण कर रहे हैं। वहीं टिकैत ने कहा कि किसान देश के गौरव पहलवानों के समर्थन में खड़े होने वाले हैं।

उत्तर भारतीय मोर्चा के प्रदेश प्रभारी बनाए गए कृपाशंकर सिंह

सूरत भूमि, संवाददाता राजेश मौर्या मुंबई। महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्यमंत्री तथा लोकप्रिय उत्तर भारतीय नेता कृपाशंकर सिंह को आज एक और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई। बीजेपी के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने आज उन्हें उत्तर भारतीय मोर्चा का प्रदेश प्रभारी नियुक्त किया है। ज्ञातव्य है कि पिछले दिनों कृपाशंकर सिंह को मोदीञ्जनसंपर्क अभियान का प्रदेश सह संयोजक नियुक्त किया गया था। उत्तर भारतीय समाज के बीच कृपाशंकर की गहरी पैठ और परंपरागत अच्छे रिश्ते और प्रभाव को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। कृपाशंकर की छवि हमेशा से उत्तर भारतीय नेता के रूप में रही है। उन्होंने हमेशा उत्तर भारतीय समाज के हितों और समस्याओं के निराकरण की दिशा में प्रभावी आवाज उठाई है। कोरोना संकटकाल में प्रवासी उत्तर भारतीयों की सुविधाओं के लिए उन्होंने जिस तरह से जमीनी काम किया, उसके चलते उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई। इस बारे में पूछे जाने पर कृपाशंकर सिंह ने कहा कि पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी का वे पूरे मनोयोग के साथ निर्वहन करेंगे। संपूर्ण उत्तर भारतीय समाज को बीजेपी से जोड़ने की दिशा में वे हर संभव प्रयास करेंगे।

काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी में दर्शन करने आए हुए श्रद्धालुओं में ठंडा शर्बत वितरण

सूरत भूमि, संवाददाता लक्ष्मीकांत पाण्डेय, जौनपुर। आइपीएस राजीव नारायण मिश्र हमेशा अपने दायित्वों के साथ साथ जनसेवा के लिए अपने महत्वपूर्ण योगदान देते रहते हैं आज काशी विश्वनाथ वाराणसी में 42 डिग्री तापमान को देखते हुए अपने 34 वाहिनी बटालियन(पीएसी) सह्योगियों के साथ मिलकर ठंडा शर्बत काशी विश्वनाथ मंदिर वाराणसी में दर्शन करने आए हुए श्रद्धालुओं एव राहगीरो को पिलाते हुए कहा कि हम सभी का दायित्व बनता है कि जनता की सेवा में अपना योगदान देकर मिलें हुए मानव जीवन का सदउपयोग कर एक दुसरे के साथ सभी के साथ चलते रहना चाहिए हमे समायानुसार पशु पक्षी बेजुबानो के लिए भी उनकी जुबान बन कर चलना चाहिए और बढ़ते गर्मी को देखते हुए जगह जगह पेयजल की व्यवस्थाओं को करते रहना चाहिए और जल को अनावश्यक रूप से अनुपयोगी नही बनाया जाना चाहिए आज पहले की अपेक्षा जल बहुत कम होता जा रहा है हम सभी को इसको सुरक्षित कर आने वाले भविष्य को सुरक्षित करने का संकल्प लेना चाहिए आपको बता दें कि आइपीएस राजीव नारायण मिश्र प्रयागराज के कुंभ नगरी में अपने महत्वपूर्ण योगदान एव सेवाभाव एव कुंभ मे वाले कल्पवाशियो को किसी भी प्रकार की अव्यवस्था ना हो इसके लिए वो स्वयं कुंभ परिक्षेत्र मे श्रद्धालुओं के बीच मे रहते हुए प्रयागराज कुंभ को बडे शांतिपूर्वक सम्पन्न कराया ।

''एक महीने के अंदर तुझे निपटा देंगे'', सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य को मिली धमकी, पुलिस से शिकायत

नई दिल्ली (एजेंसी)। अक्सर सुर्खियों में रहने वाले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य को ट्वीटर के जरिए जान से मारने की धमकी दी गई है। इसको लेकर सपा नेता की ओर से शिकायत भी दर्ज कहा दी गई है। स्वामी प्रसाद मौर्य ने अपने ट्वीटर पोस्ट के जरिए इसका खुलासा किया और इसमें शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। आपको बता दें कि स्वामी प्रसाद मौर्य अपने हिंदू विरोधी बयानों की वजह से सुर्खियों में रहते हैं।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने क्या कहा

पूर्व मंत्री और वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने अपने ट्वीट में कहा कि इण्टरनेशनल भगवा रक्षक फोर्स जय श्री राम नामक ट्वीटर एकाउंट द्वारा दिनांक 29 मई 2023, समय 7ः12 बजे सायं को अपने ट्वीटर वाल पर लिखकर कि ÷एक महीने के अंदर तुझे निपटा देंगे÷ यह टैग करने के साथ मेरी तस्वीर पर गले के सामने तलवार लटकाते हुए फोटो ट्वीट की गयी है, जो सीधे हत्या करने को इंगित करती है। इसके साथ ही उन्होंने अपने इस ट्वीटर पोस्ट को यूपी सरकार, यूपी पुलिस, मुख्य सचिव यूपी, डीजीपी यूपी, लखनऊ सीपी को टैग करते हुए कहा

कि उक्त प्रकरण की गम्भीरता को संज्ञान में लेते हुए प्रभारी कानूनी कार्यवाही सुनिश्चित कराने का कष्ट करें।

दो फोटो भी किया ट्वीट

स्वामी प्रसाद मौर्य ने जिस आईडी से उन्हें धमकी मिली है उसकी भी तस्वीर जारी की है। साथ ही साथ उस ट्वीटर पोस्ट को भी जारी किया है जिसमें लिखा है %स्वामी प्रसाद मौर्य तेरे दिन पूरे हो गए हैं, एक महीने में तुझे निपटा देंगे, इसकी उलटी गिनती शुरू..% स्वामी ने प्रधानमंत्री दफ्तर और गृह मंत्रालय को भी टैग करते हुए इस मामले पर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित कराने की मांग की है। मौर्य, एक प्रमुख ओबीसी नेता, जो सपा एमएलसी भी हैं, ने इस साल की शुरुआत में विवाद खड़ा कर दिया था जब उन्होंने कहा था कि रामचरितमानस के कुछ छंद जाति के आधार पर समाज के एक बड़े वर्ग का अपमान करते हैं और मांग करते हैं कि इन पर प्रतिबंध लगाया जाए।

चार हजार से अधिक महिलाएं पहली बार बिना महरम के हज यात्रा करेंगी

-केन्द्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने पहले जत्थे को किया रवाना, पीएम मोदी को कहा शुक्रिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की चार हजार से अधिक महिलाएं पहली बार बिना महरम के हज यात्रा पर रवाना हो रही हैं। इसके लिए उन्होंने पीएम मोदी का शुक्रिया अदा किया। महिलाओं के पहले जत्थे को केन्द्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने रवाना किया। अब हज यात्रा के लिए महिलाएं अकेले जा सकती हैं। यह सभी महिलाएं बिना महरम यानी पति या किसी भी पुरुष जो उनके रक्त संबंधी हो, उनके बिना यात्रा करेंगी। देशभर में इसको लेकर उत्साह देखने को मिल रहा है। बिना महरम के देशभर से यात्रा करने वाली महिलाओं की संख्या में चार हजार से ज्यादा की बढ़ोतरी देखने को मिली है। यह सभी महिलाएं हज यात्रा के लिए अकेले ट्रेवल करेंगी। जानकारी के अनुसार केवल दिल्ली से 39 महिलाएं हज यात्रा के लिए अकेले रवाना होगी। यह सभी महिलाएं पहली बार बिना महरम के यात्रा करेंगी। दिल्ली एयरपोर्ट पर हज के लिए इन यात्रियों का एक समूह रवाना हो गया है। केंद्रीय राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने महिलाओं के इस जत्थे को रवाना किया। उन्होंने महिलाओं के समूह को रवाना करते हुए कहा कि मोदी सरकार में महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं। घरों से अकेले बाहर निकल रही हैं।

हालांकि पहले हज यात्रा के लिए हमेशा महरम का होना आवश्यक होता था, बिना उसके महिलाएं अकेले हज के लिए यात्रा नहीं कर सकती थी।

लेकिन, अब यह सभी महिलाएं अकेले हज की यात्रा के लिए रवाना हो रही है, जो कि एक एतिहासिक कदम है। केन्द्रीय मंत्री लेखी ने कहा कि महिला यात्रियों के जत्थे को लेकर काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही हैं। इस तरह से सऊदी एयरलाइंस द्वारा पहली बार हज यात्रा के लिए महिलाओं को रवाना करने का ये ऑपरेशन सफल माना जा रहा है। लेखी ने बताया कि हज यात्रा के दौरान महिलाओं को वो सारी सुविधाएं दी जाएंगी, जिससे उन्हें कोई परेशानी का समाना न करने पड़े।

इसके लिए पैरामिलिट्री फोर्स की तैनाती के अलावा महिलाओं की फिटनेस ट्रेनिंग का भी पूरा ध्यान रखा जा रहा है। सऊदी में

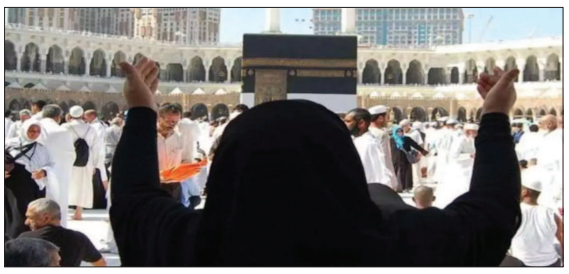

महिलाओं के रहने और ठहरने का भी पूरा इंतजाम किया गया है। इमरजेंसी या तबीयत बिगड़ने जैसे हालात को देखते हुए महिलाओं के लिए दवाइयों और स्वास्थ्य सेवाओं का भी पूरा ध्यान रखा गया है। हज यात्रा में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कड़ी व्यवस्था की गई है। अकेले यात्रा कर रही इन महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह पहली बार है जब सभी महिलाएं हज के लिए अकेले यात्रा कर रही है।

इमरान शराब और कोकीन का इस्तेमाल नहीं करते, स्वास्थ्य मंत्री के सभी आरोप गलत

–इमरान के खून और पेशाब के टेस्टों से हुआ साफ

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खून और पेशाब की जो टेस्ट रिपोर्ट राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) के पास है, वह बताती हैं कि पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के प्रमुख शराब और कोकीन का इस्तेमाल नहीं करते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक करीबी सूत्र ने बताया कि इमरान खान की मेडिकल रिपोर्ट संघीय स्वास्थ्य मंत्री अब्दुल कादिर पटेल द्वारा कुछ दिनों पहले लगाए गए आरोपों का समर्थन नहीं करती है। सूत्र ने कहा कि इमरान की मेडिकल रिपोर्ट बताती है कि उनके सभी स्वास्थ्य संकेत सामान्य हैं। उन्होंने कहा कि इमरान के रक्त व मूत्र के नमूने तब लिए गए थे जब वह एनएबी की हिरासत में थे और इसी वजह से इन नमूनों की रिपोर्ट एनएबी की संपत्ति है। उन्होंने कहा, 'एनएबी के पास मौजूद मेडिकल रिपोर्ट स्वास्थ्य मंत्री के आरोपों की कहीं से भी पुष्टि नहीं करती है। दरअसन स्वास्थ्य मंत्री ने कुछ दिन पहले आरोप लगाया था कि भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तारी के दौरान किए गए इमरान के मेडिकल परीक्षण में शराब और कोकीन के सेवन का पता चला था। इसके लिए पटेल ने पांच डॉक्टरों के पैनल द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट का हवाला दिया था। उन्होंने कहा था कि प्रारंभिक चिकित्सा रिपोर्ट में 'शराब और कोकीन' जैसे 'जहरीले रसायनों' के इस्तेमाल का पता चला है। स्वास्थ्य मंत्री, जिन्होंने कहा था कि सरकार इमरान की मेडिकल रिपोर्ट सार्वजनिक करेगी, ने यह भी दावा किया था कि पीटीआई प्रमुख की मानसिक स्थिरता पर सवाल खड़े किए थे।

श्रीलंका ने पर्यटन को बढ़ावा देने सुपरस्टार रजनीकांत को किया आमंत्रित

कोलंबो । श्रीलंका ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारतीय सुपरस्टार रजनीकांत को अपने देश आने के लिए आमंत्रित किया है। श्रीलंका के उप उच्चायुक्त, डॉ.डी. वेंकटेश्वरन ने अभिनेता से चेन्नई में उनके आवास पर मुलाकात कर उन्हें द्वीप राष्ट्र का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा, उनकी उपस्थिति सिनेमा-प्रेरित पर्यटन के साथ-साथ स्पिरिचुअल और वेलनेस पर्यटन को बढ़ाएगी। दूत ने रजनीकांत को रामायण ट्रेल को एक्सप्लोर करने के लिए निमंत्रण दिया जो श्रीलंका में ही है। साथ ही भारत के दक्षिणी पड़ोसी देश में अन्य अद्वितीय बौद्ध स्थल भी हैं। पद्म भूषण से सम्मानित सुपरस्टार को श्रीलंका में तमिल समुदाय बड़े पैमाने पर फॉलो करता है। फिल्म प्रेमी सिंहली और अन्य जातीय समुदायों में भी वहां बेहद लोकप्रिय हैं।

उत्तर कोरिया ने लांच की बैलिस्टिक मिसाइल, जापान ने जारी किया अलर्ट

टोक्यो ।उत्तर कोरिया ने सैन्य जासूसी उपग्रह की पुष्टि के अगले दिन बुधवार को संभावित बैलिस्टिक मिसाइल दागी है। दक्षिण कोरिया की सेना ने बताया कि उत्तर कोरिया ने संभावित बैलिस्टिक मिसाइल दागी है। हालांकि, जापान ने दक्षिण कोरिया की सेना के बयान के बाद बुधवार सुबह ओकिनावा क्षेत्र के लिए अपनी मिसाइल चेतावनी प्रणाली को सक्रिय कर दिया है। प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा ट्वीट कर अलर्ट जारी किया गया है। पीएमओ ने मिसाइल लॉन्च को लेकर कहा कि ऐसा लगता है कि उत्तर कोरिया ने एक मिसाइल लांच की है। यह देखकर लोग इमारतों या फिर भूमिगत स्थानों पर शरण लें। हालांकि, करीब 30 मिनट बाद सरकार ने ट्वीट किया कर बताया कि इस अलर्ट रद्द किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उम्मीद की जा रही है कि ये मिसाइल जापानी क्षेत्र की ओर नहीं आएगी। बता दें कि उत्तर कोरिया द्वारा लांच किए जाने के जवाब में जापान ने पिछले कई मौकों पर अपने मिसाइल पूर्व चेतावनी अलार्म को अलर्ट किया है। हालांकि, ये अलर्ट आमतौर पर जल्दी हटा दिया जाता है।

चीन ने सरेआम तोड़ी बड़ी मस्जिद, 56 मुस्लिम देशों ने साधी चुप्पी

बीजिंग। चीन ने सरेआम एक मस्जिद को तोड़ना शुरू कर दिया और उसे बचाने आए मुसलमानों को वहां की पुलिस ने बल प्रयोग करते हुए उनकी पिटाई कर डाली। चीन की पुलिस एक प्राचीन मस्जिद को तोड़ने के लिए हथौड़ा लेकर पहुंच गई थी। ट्विटर पर वायरल वीडियो के अनुसार, युन्नान प्रांत में जातीय रूप से हुई मुसलमानों के लिए इबादत और धार्मिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण नजियायिंग मस्जिद के गुबंद और मिनार को तोड़ने की कोशिश करने पर भीड़ के साथ झड़प हुई। बताया जा रहा है कि ये मस्जिद कई सौ साल पुरानी है। रविवार को सशस्त्र पुलिस के दर्जनों अधिकारी पहुंचे। वाशिंगटन पोस्ट ने बताया कि यह घटना 2020 के एक अदालत के फैसले से संबंधित है, जिसमें मस्जिद के कुछ सबसे हालिया नवीनीकरणों को अवैध और विध्वंस का आदेश दिया गया था। टोंगई काउंटी पुलिस ने इस घटना को 'व्यवस्थित सामाजिक प्रबंधन के लिए गंभीर रूप से हानिकारक' करार दिया और इसमें शामिल किसी भी व्यक्ति से 6 जून से पहले खुद को कानून प्रवर्तन में आत्मसमर्पण करने का आग्रह किया ताकि हल्की सजा का मौका मिल सके। लेकिन सबसे हैरानी की बात है कि मस्जिद गिराने की बात पर पाकिस्तान और तुर्की जैसे देशों ने आंखों पर पट्टी बांध ली। इतना ही नहीं खुद को इस्लामिक देशों का अगुवा मानने में लगे सऊदी अरब, कतर, यूएई जैसे देशों के मुंह से भी इस घटना को लेकर एक शब्द नहीं निकला। ओआईसी के 56 देश भी चीन के सामने अपनी आवाज निकालने से गुरेज करते दिखे। किसी ने भी मस्जिद को तोड़ने वाले और मुसलमानों को मारने वाले चीन की निंदा नहीं की है।

विश्व निकाय के शांति अभियानों की तेज गति सुनिश्चित करने में भारत की भूमिका अहम

जिनेवा ।संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा अभियान के प्रमुख ने डिजिटल प्रौद्योगिकियों के महत्व को देखकर इस संदर्भ में विश्व निकाय के शांति अभियानों की तेज गति सुनिश्चित करने के लिए भारत की पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत शांतिरक्षा के डिजिटलीकरण की संयुक्त राष्ट्र की रणनीति में एक ''प्रमुख भागीदार'' है। उन्होंने 'ब्लू हेलमेट' के खिलाफ अपराधों के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने जैसी अहम पहलों में भारत की भागीदारी और प्रतिबद्धता की सराहना की। 'ब्लू हेलमेट' संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा सेना के जवानों को कहा जाता है। भारत संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा अभियानों में कर्मियों के योगदान के मामले में तीसरे नंबर पर है। उसके 6000 से अधिक सैन्य एवं पुलिस कर्मी साइप्रस, कांगो, लेबनान, पश्चिम एशिया और पश्चिम सहारा क्षेत्र में तैनात हैं। शांतिरक्षा अभियानों के लिए अपर महासचिव ज्यां पियरे लैक्रोइक्स ने कहा, ''भारत दुनिया में, संयुक्त राष्ट्र में, बहुपक्षवाद में बड़ी भूमिका निभाता है और यह शांतिरक्षा अभियानों में भी अहम योगदान देता है। केवल बलों और पुलिस के संदर्भ में ही उसका योगदान महत्वपूर्ण नहीं है। हम शांतिरक्षा में सुधार के लिए जो कदम उठाते हैं, उनमें भी कई तरीके से हमारी मदद की जाती है। संयुक्त राष्ट्र ने शांतिरक्षा अभियान के 75 वर्ष पूरे होने पर 29 मई को अंतरराष्ट्रीय संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षक दिवस मनाया। इस वर्ष आयोजन की विषय विस्तु थी ''शांति मुझसे शुरू होती है''। संयुक्त राष्ट्र के तहत सेवा करते हुए पिछले साल अपनी जान गंवाने वाले तीन भारतीय शांति सैनिक उन 103 सैन्य, पुलिस और असैन्य शांति सैनिकों में शामिल हैं, जिन्हें मरणोपरांत 'डैग हैमरस्कॉल्ड मेडल' से सम्मानित किया गया। इन तीन भारतीयों में सीमा सुरक्षा बल के हेड कांस्टेबल शिशुपाल सिंह और संवाली राम विश्नोई शामिल हैं, जिन्होंने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में संगठन स्थिरीकरण मिशन के साथ काम किया और शाबर ताहेर अली इराक के लिए संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन में कार्यरत थे। संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा में सबसे ज्यादा सैनिक भेजने वाले देशों में से एक भारत ने इस साल की शुरुआत में अबेई में महिला शांतिरक्षकों की भी एक पलटन तैनात की थी। यह संयुक्त राष्ट्र अभियान में भारत की सबसे बड़ी एकल महिला पलटन की तैनाती है। उन्होंने भारत सहित, शांतिरक्षा अभियानों में दलों एवं पुलिस संबंधी योगदान देने वाले देशों से इकाइयों में केवल अधिक संख्या में महिलाएं भेजने के लिए नहीं, अपितु सैन्य, पुलिस एवं सैन्य इलाकों में ऊंचे पदों के लिए अधिक महिला उम्मीदवारों की तैनाती करने का आग्रह किया। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के तौर पर अपने कार्यकाल के अंत में अपनी अध्यक्षता के दौरान पिछले साल दिसंबर में 'ग्रुप ऑफ फेंड्स' की शुरुआत की थी, जिसका मकसद शांतिरक्षकों के खिलाफ अपराधों के लिए जवाबदेही बढ़ाना है।

ब्रासीलिया में दक्षिण अमेरिकी सम्मेलन में एकसाथ नजर आये कोलंबिया , बोलीविया , ब्राजील और अर्जेंटीना के राष्ट्रपति।

मस्क को झटका, ट्विटर की वैल्यू वर्तमान में 33 फीसदी रह गई

वाशिंगटन ।7 माह पहले दुनिया के सबसे अमीर कारोबारियों में शामिल एलन मस्क ने ट्विटर को 44 बिलियन डॉलर में खरीदा था। तब मस्क ने जोर देकर कहा था कि उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिए ज्यादा पैसे दिए हैं। नया साल शुरू हुआ और रिपोर्ट आई कि ट्विटर की वैल्यूशन में 50 फीसदी की कमी आ गई है। अब मई में जो डाटा निकलकर सामने आ रहा है, वहां और भी चौकाने वाला है। ट्विटर की वैल्यू 29 बिलियन डॉलर से ज्यादा कम हो चुकी है जोकि एक बड़ा झटका है। इसका मतलब है कि 7 महीने में कंपनी की वैल्यू सिर्फ 33 फीसदी ही रह गई है। मस्क ने स्वीकार किया है कि उन्होंने ट्विटर के लिए ज्यादा पेमेंट किया, जिसे उन्होंने 44 बिलियन डॉलर में खरीदा, जिसमें 33.5 बिलियन डॉलर की इक्विटी भी शामिल है। कुछ महीने पहले मस्क ने खुद कहा था कि ट्विटर के लिए उन्होंने जो भुगतान किया है, उसके आधे से भी कम वैल्यू का है। यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि फिडेलिटी वैल्यूएशन पर किस आधार पहुंची है या उन्हें कंपनी की ओर से जानकारी मिली है। फिडेलिटी ने सबसे पहले नवंबर में अपने ट्विटर शेयर का कीमत घटाकर परचेज वैल्यू का 44 फीसदी कर दिया था। इसके बाद दिसंबर और फरवरी में और मार्कडाउन किया गया। मस्क के पदभार संभालने के बाद से ट्विटर आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहा है। 13 अरब डॉलर के कर्ज को देखते हुए मस्क ने मस्क के कंटेंट मॉडरेशन के साथ कुछ ऐसे फैसले लिए जिसकी वजह से ट्विटर का रेवेन्यू 50 फीसदी तक कम हो गया। वहीं दूसरी ओर ट्विटर ब्लू सब्सक्रिप्शन बेचकर उस रेवेन्यू को दोबारा हासिल करने का प्रयास अब तक विफल रहा है। मार्च के अंत में, ट्विटर के मासिक यूजर्स में से 1 फीसदी से भी कम ने साइन अप किया था। वैसे ट्विटर ने इस बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है।

मंगल ग्रह पर मिले पानी होने के संकेत, 66 फीट गहरी नदी के निशान मौजूद

वाशिंगटन (एजेंसी)। मंगल ग्रह पर पानी होने के संकेत मिलने से नासा के वैज्ञानिक बेहद खुश हैं। जानकारी के अनुसार नासा के पर्सीवरेंस रोवर और चीन के झुरोंग रोवर को मंगल ग्रह पर बहती नदियों और भीगे हुए रेत के टीलों के संकेत मिले हैं। चीन के रोवर ने पाया कि आज से करीब 4 लाख साल पहले अत्यधिक ठंड की वजह से रेत के टीले जम कर कड़े हो गए होंगे। वहीं नासा के पर्सीवरेंस को जो संकेत मिले हैं उनके अनुसार ताकतवर जलमार्ग ने जेजीरो क्रेटर में अपना रास्ता बनाया होगा, जिसकी वजह से इसमें अच्छी खासी दर से पानी गिरा होगा। नासा के पर्सीवरेंस को मंगल की अब तक की सबसे बड़ी नदी मिली है। चट्टानों के आकार से यह अंदाजा लगाया गया है कि यह नदी कुछ जगहों पर 66 फीट से ज्यादा गहरी थी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह संरक्षित नदी के किनारे की रेत थी।

इस संबंध में यूटा में ब्रिघम यंग यूनिवर्सिटी के शोधार्थी जानी राडेब का दोनों कहना है कि यह बहुत अहम जानकारी है जो दूसरे ग्रह की सतह के बारे में हमें बता रही है। जानकारी के मुताबिक चीन के रोवर ने मंगल की सतह पर पानी के निशान खोजे हैं। रोवर के करीब रेत के टीले पर एक तरह की पपड़ी बन गई थी जो पानी के खनिजों के संपर्क में आने से बनी होगी। हो सकता है कि पूर्व में पानी यहां इन रेत के टीलों पर पाले की वजह से आया होगा या हजारों साल पहले ग्रह के झुकाव की वजह से इस क्षेत्र में बर्फ गिरी होगी।

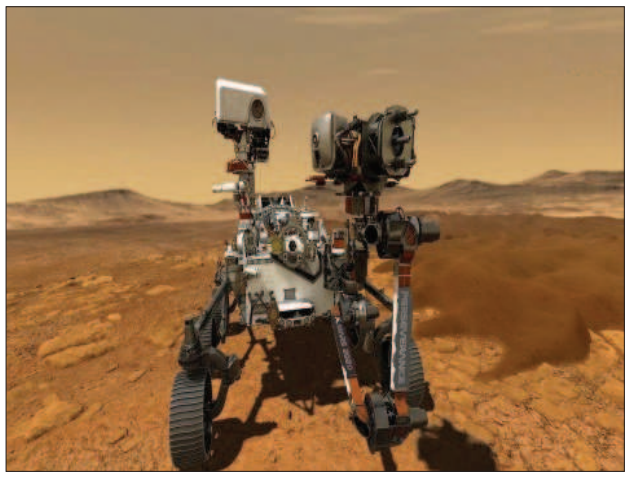

इस मामले में ब्राउन यूनिवर्सिटी के ग्रह वैज्ञानिक और नासा के मंगल उत्सुकता मिशन के सदस्य राल्फ मिल्लिकेन का कहना है कि मंगल पर पाई जाने वाली धूल खनिज से लबरेज है जो हवा में मौजूद पानी को सोख सकती है। अगर यह सामग्री रेत के टीलों को ढक लेती है, तो मौसम में आए बदलाव से पैदा हुई आर्द्रता धूल से पानी को सोख सकती है और फिर बिना तरल बने उसे छोड़ सकती है। मिलिकेन का कहना है कि यह वह प्रक्रिया है जो मंगल ग्रह पर अलग-अलग जगह पर हो सकती है।

नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जहां चीन के रोवर ने भीगे हुए रेत के टीलों की जांच की। वहीं पर्सीवरेंस ने एक शक्तिशाली धारा के अवशेषों की खोज की। नासा के रोवर ने जो साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं, उसके हिसाब से ग्रह पर प्राचीन समय में एक नदी बहा करती थी जो काफी गहरी थी। और इसका बहाव काफी तेज था। यह नदी उस जलमार्ग के नेटवर्क का हिस्सा था जो जेजीरो क्रेटर में बहता था। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि यह वही क्षेत्र है जहां रोवर पिछले 2 सालों से सूक्ष्म जीवों के जीवन के संकेतों की उम्मीद में खोज कर रहा है। इससे साफ हो जाता है कि एक ताकतवर नदी अपने साथ बहुत सारा मलबा लेकर आई है। जो 820 फीट लंबा और घुमावदार है जो बहते हुए पानी का संकेत देता है। इस घुमावदार इकाई के बीच एक जगह को स्प्रिंकल हेवन का नाम दिया गया है।

9 मई के हमले के मामले में इमरान पर सैन्य अदालत में चलेगा मुकदमा: पाक मंत्री

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में पूर्व पीएम इमरान खान और सरकार के बीच तनातनी का दौर जारी है। पाक सरकार इमरान खान को किसी न किसी केस में फंसाने की हर कोशिश में लगी हुई है। अब पाकिस्तान के गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने कहा है कि पूर्व प्रधानमंत्री और पीटीआई के अध्यक्ष इमरान खान को 9 मई के हमलों में उनकी भूमिका के लिए सैन्य अदालत में मुकदमे का सामना करना होगा। मीडिया से बात करते हुए सनाउल्लाह ने इमरान पर सैन्य प्रतिष्ठानों पर व्यक्तिगत रूप से हमले की योजना बनाने का आरोप लगाया और दावा किया कि इन आरोपों को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं। उन्होंने कहा कि यह सब दस्तावेज है। इसका सुबूत इमरान के ट्वीट और संदेशों में है। इस्लामाबाद हाई कोर्ट परिसर से राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो के आदेश पर अर्धसैनिक रेंजरों द्वारा 9 मई को पीटीआई प्रमुख को हिरासत में लिए जाने के बाद देश भर में हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए थे।

मीडिया ने बताया कि दंगाइयों ने नागरिक बुनियादी ढांचे और सैन्य प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ की और यहां तक कि रावलपिंडी में जनरल मुख्यालय और लाहौर कॉर्प्स कमांडर के आवास पर हमला किया, जिसे जिन्ना हाउस के नाम से भी जाना जाता है। साक्षात्कार के दौरान यह पूछे जाने पर कि क्या पीटीआई के अध्यक्ष पर एक सैन्य अदालत में मुकदमा चलाया जाएगा, गृह मंत्री ने जवाब दिया कि बिल्कुल, क्यों नहीं चलाया जाना चाहिए? उन्होंने जो कार्यक्रम बनाया था कि सैन्य प्रतिष्ठानों को टारगेट करें और उन्होंने इसे कैसे अंजाम दिया, यह बिल्कुल सैन्य अदालतों का मामला है। मीडिया के अनुसार सनाउल्लाह ने दावा किया कि पूर्व प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से हमलों को अंजाम दिया।

तानाशाह किम जोंग का पहला स्पाई सैटेलाइट विफल, लॉन्च होते ही समंदर में गिरा मलबा

– दक्षिण कोरिया ने वायरल किया तस्वीरें

प्योंगयांग (एजेंसी)। उत्तर कोरिया का मुखिया एवं सनकी तानाशाह नेता किम जोंग उन अक्सर हठधर्मी एवं अमानवीय कार्य करते रहते हैं, जिससे सुर्खियों में बने रहते हैं। एक बार फिर उनकी हरकत सुर्खियों में आ गई है। दरअसल उत्तर कोरिया ने अपना पहला जासूसी सैटेलाइट स्पाई बुधवार को लॉन्च किया, लेकिन यह बुरी तरह से फेल हो गया। इसके बाद रॉकेट और सैटेलाइट स्पाई का मलबा समंदर में जा गिरा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस विफलता के साथ ही किम जोंग उन को अपनी सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने के मंसूबों पर एक और धक्का लगा है। उल्लेखनीय है कि इन दिनों उत्तर कोरिया का संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण कोरिया के साथ तनाव बढ़ता जा रहा है। उत्तर कोरिया ने एक बयान में कहा है कि वह लॉन्चिंग के विफल होने के कारणों की जांच कर रहा है। उत्तर कोरिया ने अपने रॉकेट लिफ्टऑफ के साथ क्या गलत हुआ, यह पता लगाने के बाद दूसरी लॉन्चिंग करने की कसम खाई है। उत्तर कोरिया ने कहा है कि जून में फिर से सैटेलाइट की लॉन्चिंग की जाएगी। वहीं दक्षिण कोरिया ने उत्तर कोरिया के जासूसी सैटेलाइट के उस हिस्से की तस्वीरें जारी की है, जो बुधवार को लॉन्चिंग के तुरंत बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

अखंड भारत के नक्शे में लुंबिनी व कपिलवस्तु के शामिल होने से बिफरे ओली व भट्टाराई

–नेपाल में मचा बवाल, निशाने पर भारतीय संसद

काठमांडू (एजेंसी)। भारतीय संसद में अखंड भारत का नक्शा लगाए जाने पर नेपाल में बवाल मच गया है। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली तथा एक और पूर्व पीएम बाबूराम भट्टाराई ने अखंड भारत के नक्शे पर कड़ा विरोध दर्ज कराया है और चेतावनी भी दी है। बाबूराम भट्टाराई ने तो यहां तक कह दिया कि भारत की संसद में लगे अखंड भारत के भित्ति-चित्र से दोनों देशों के बीच संबंध रसातल में चले जाएंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि इस अखंड भारत के भित्ति-चित्र से नेपाल समेत पड़ोसी देशों के साथ अनावश्यक और नुकसान पहुंचाने वाला विवाद पैदा होगा। यह विवाद तब पैदा हुआ है, जब नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड भारत के पहले दौरे पर आ रहे हैं।

चीन के इशारे पर नाचने वाले केपी ओली ने मांग की है कि नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड लुंबिनी और कपिलवस्तु को अखंड भारत के भित्तिचित्र में शामिल करने के खिलाफ निश्चित रूप से विरोध दर्ज कराएं। लुंबिन भगवान बुद्ध की जन्मस्थली है। यह वही ओली हैं जो अक्सर भारत के खिलाफ जहरीले बयान देते रहते हैं। वहीं नेपाल समाजवादी पार्टी के चेयरमैन बाबूराम भट्टाराई ने एक ट्वीट करके यह भी कहा कि भारतीय नेताओं को इस भित्तिचित्र को लगाए जाने की मंशा और उसके प्रभाव के बारे में सही समय की जानकारी देना चाहिए।

अखंड भारत के भित्तिचित्र में लुंबिनी और कपिलवस्तु के अलावा पाकिस्तान के तक्षशिला को भी शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय नेताओं को इस पूरे मामले में सफाई देना चाहिए। अखंड भारत के इस भित्तिचित्र को भारत की संसद भवन की नई इमारत में लगाया गया है। इस बीच नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड अपने पहले विदेशी दौरे पर आज भारत आ रहे हैं। उनके साथ एक भारी-भरकम प्रतिनिधिमंडल है। इस यात्रा के दौरान अखंड भारत का मुद्दा भी गरमा सकता है।

प्रचंड ने कहा है कि उनकी इस भारत यात्रा से लंबे समय के लिए बिजली के व्यापार का रास्ता साफ होगा। उन्होंने आशा जताई कि सभी तरह की बाधाएं दूर हो जाएंगी और नेपाल अपनी ज्यादा बिजली को आसानी से बेच सकेगा। प्रचंड इस दौरे पर पीएम मोदी, विदेश मंत्री और कई अन्य नेताओं से मुलाकात करेंगे। उनका यह दौरा 4 दिन का है। वामपंथी प्रचंड की मंद?र भी जाने की योजना है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह भारतीय नेतृत्व से कालापानी सीमा विवाद का मुद्दा भी उठाएंगे। नेपाली पीएम भारत के बाद चीन के दौरे पर भी जाएंगे। इस वजह से इस यात्रा को काफी अहम माना जा रहा है।

राहुल की मोहब्बत की दुकान में खालिस्तानियों ने डाला व्यवधान, 1984 दंगों को लेकर लगाए गांधी परिवार के खिलाफ नारे

प्योंगयांग (एजेंसी)। पूर्व कांग्रेस प्रमुख राहुल गांधी को अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया में एक कार्यक्रम के दौरान खालिस्तानी समर्थकों के एक समूह ने घेर लिया था। गांधी 10 दिवसीय अमेरिका यात्रा पर हैं। उन्होंने सैन फ्रांसिसको में 'मोहब्बत की दुकान' कार्यक्रम को संबोधित किया। एक वीडियो में खालिस्तान समर्थकों को राहुल गांधी को परेशान करते और सैन फ्रांसिस्को में 'मोहब्बत की दुकान' कार्यक्रम को बाधित करते हुए दिखाया गया है। कार्यक्रम में खालिस्तान जिंदाबाद के नारे भी लगाए गए।

जब दर्शकों में से कुछ लोगों ने 1984 के सिख विरोधी दंगों के संबंध में उनके और गांधी परिवार के खिलाफ नारे लगाने शुरू कर दिए। उन्होंने कुछ देर के लिए उनके भाषण को बीच में ही रोक दिया। हालाँकि, गांधी मुस्कुराए और कहा कि स्वागत है, स्वागत है ... नफ़रत के बाज़ार में मोहब्बत की दुकान। इसके बाद कांग्रेस नेता दर्शकों में अपने समर्थकों के साथ शामिल हुए और 'भारत जोड़ो' के नारों के साथ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के बारे में दिलचस्प बात यह है कि यह सभी के प्रति स्नेह रखती है।

राहुल ने कहा कि अगर कोई आना चाहता है और कुछ भी कहना चाहता है, चाहे वह कुछ भी कह रहा हो, तो हम उसे सुनकर खुश होते हैं। हम गुस्सा नहीं होने वाले हैं, हम आक्रामक नहीं होने जा रहे हैं। हम इसे अच्छी तरह से सुनेंगे। वास्तव में, हम उनके प्रति स्नेही रहेंगे, उनके प्रति प्रेमपूर्ण रहेंगे। क्योंकि यही हमारा स्वभाव है। बीजेपी के आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने ट्विटर पर इस घटना की एक क्लिप साझा की और लिखा कि राहुल गांधी ने अमेरिका में 1984 के सिख नरसंहार (कांग्रेस द्वारा फैलाया गया) के लिए हंगामा किया...ऐसी नफरत की आग लगी थी, जो अब तक नहीं बुझी। अमेरिका स्थित खालिस्तानी संगठन सिख फॉर जस्टिस ने इसकी जिम्मेदारी ली है। एसएफजे के प्रमुख गुरपतवंत सिंह पन्नू ने इस घटना का वीडियो जारी करते हुए कहा कि राहुल गांधी अमेरिका में जहां-जहां जाएंगे

खालिस्तान समर्थक सिख तुम्हारे सामने खड़े होंगे।

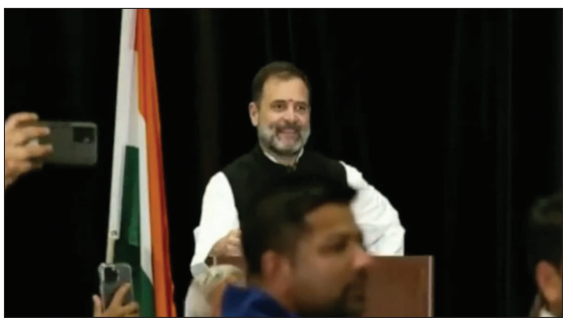

संपादकीय

अनुकरणीय जीवन

प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं । गीत की यह लाईन कम शब्दों में कितने भावों को समाहित कर रही हैं ।हम स्वयं अपनेजीवन में गलत किसी भी तरह का हो उससे बचते हुए आचरणों में लाकर अपने जीवन को अच्छा व खुशहाल बनाये । जन्म और मरण के बीच की कला हमारा जीवन है 7 जो हमारे सार्थक वसही जीने पर निर्भर हैं। मानव अपने जन्म के साथ ही जीवन मरण, यश अपयश, लाभ हानि, स्वास्थ बीमारी, देह रंग, परिवार समाज, देश स्थान आदि सब पहले से ही निर्धारित कर के आता है। साथ ही साथ अपने विशेष गुण धर्म, स्वभाव, और संस्कार सब पूर्व से लेकरआता है। अपने पुरुषार्थ से अपने सत्तकर्म से जीवन गाथा लिखनी हैं तो कहते हैं सुख वैभव भावी पीढ़ी को कालकुट तुम स्वयं पी गये ।मृत्यु भला क्या तुम्हें मारती मरकर भी तुम पुन: जी गये । हमारा स्वयं का आचरण , पारिवारिक सामंजस्यता , सामाजिक कर्तव्यपरायणता के साथ आदि में हो आत्म साधना का हमारा जीवन। हों सदा प्रेम से भरे हमारे नयन। श्रद्धा से नत हो हमारा मस्तक , हाथ सदा सहयोग को रहेतत्पर। सन्मार्ग पर हमारे चलते रहें चरण। निकले हमारी जिह्वा से सदा मधुर एवं सत्य वचन आदि । इस तरह जिस इंसान के कर्म अच्छेहोते है उस के जीवन में कभी अँधेरा नहीं होता। इसलिए अच्छे कर्म करते रहे वही आपका परिचय देगे । यही आपका जीवन अनुकरणीयबनायेगे ।

प्रदीप छाजेड़
(बोरावड़)

आज का राशीफल

मेष अर्थिक योजना सफल होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

वृषभ जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। नए अनुबंध प्राप्त होंगे। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा।

मिथुन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। किसी रिश्तेदार के आगमन से मन प्रसन्न रहेगा। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। अपनों से तनाव मिलेगा।

कर्क व्यावसायिक योजना सफल होगी। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। आय और व्यय में एक संतुलन बना कर रखें अन्यथा कर्ज की स्थिति आ सकती है। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी।

सिंह प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। धन लाभ की संभावना है। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

कन्या पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। स्थानान्तरण व परिवर्तन की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें।

तुला व्यावसायिक तथा आर्थिक प्रयास सफल होंगे। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ेगी।

वृश्चिक आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। अनावश्यक खर्चों का सामना करना पड़ेगा। पिता या उच्चाधिकारी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

धनु व्यावसायिक तथा आर्थिक योजनाएं सफल होंगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। खान-पान में संयम रखें। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। विरोधियों का पराभव होगा।

मकर पारिवारिक जनों से पीड़ा मिल सकती है। संतान के संबंध में चिंतित रहेंगे। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। प्रियजन पीड़ा मिल सकती है।

कुम्भ जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। विरोधी परास्त होंगे।

मीन गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें, चोरी या खोने की आशंका है। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें।

भारत वर्ष के चार लाख करोड़ के दूध बाजार पर है दुनिया की नजर

(लेखक - विष्णु अग्रवाल)

एक जून मिल्क डे (दूध दिवस) विशेष

भारत के डेरी सेक्टर में 70 से 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग असंठित क्षेत्र के डेरी सेक्टर में है। विश्व में भारत में दूध उत्पादन में भले ही एक नम्बर स्थान पर है फिर भी मानक स्तर के मामले में देखा जाये तो हम बहुत पीछे है। पौष्टिकता दूध में है दूध पदार्थ में वो किसी भी फूड पदार्थ में नही । दूध में सिर्फ मुख्यता दो चीज की कमी है फायवर व आयरन अगर दोनो को मिला दिया जाये तो कम्पलीट फूट बनता है हम दूध में किस तरह से फायवर व आयरन मिला सकते है हमारे देश में कई राष्ट्रीय स्तर की डेरी अनुसंधान सस्थाये शोध कर रही है ।

(भारत वर्ष में 25 करोड़ बच्चे आज भी गाय भैस का दूध पीने से वंचित है आज भी 35 करोड़ो परिवारो को शुद्ध देशी घी खाने को नही मिलता है) विश्व में भारत लगभग एक दशक से भारत दूध में पहले स्थान पर रहा है विश्व के कुल दूध उत्पादन में लगभग 23 प्रतिशत का योगदान है वर्ष 17-18 में 170 मिलियन दूध का उत्पादन हो रहा है प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दूध उपलब्धता 220 ग्राम के लगभग है कृषि जी.डी.पी. में पशु पालको का योगदान लगभग 26 प्रतिशत है दुनिया के सर्वश्रेष्ठ भैस व गाय नस्लो का उदगम स्थल है। भारत सरकार की राष्ट्रीस डेयरी अनुसंधान करनाल संस्थाये दूध उत्पादन बढने के लिए कई तरह के शोध कर रही है। दूध उत्पादन की सर्वश्रेष्ठ श्रृखंला में दूध से बनी मिठाईयों का बहुत बडा योगदान है। मिठाई बनाने वालो को राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान करनाल के शोध किये हुये प्रोडेक्टो का लाभ मिलना चाहिये। जो दुकानदारो को नही मिल रहा। एक लाख लोगो को प्रत्यक्ष रूप से डेयरी उद्योग म0प्र0 मे रोजगार दे सकता है। म0प्र0 सरकार को डेयरी उद्योग के लिये अनुसांधन करने की आवश्यकता है।

भारत के डेरी सेक्टर में 70 से 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग असंठित क्षेत्र के डेरी सेक्टर में है। विश्व में भारत में दूध उत्पादन में भले ही एक नम्बर स्थान पर है फिर भी मानक स्तर के मामले में देखा जाये तो हम बहुत पीछे है। पौष्टिकता दूध में है दूध पदार्थ में वो किसी भी फूड पदार्थ में नही । दूध में सिर्फ मुख्यता दो चीज की कमी है फायवर व आयरन अगर दोनो को मिला दिया जाये तो कम्पलीट फूट बनता है हम दूध में किस तरह से फायवर व आयरन मिला सकते है हमारे देश में कई राष्ट्रीय स्तर की डेरी अनुसंधान सस्थाये शोध कर रही है । दूध में प्रोटीन, कैल्शियम और राईबोफ्लेबिन (विटामिन बी-2) विटामिन-ए डी, के व ई सहित फॉस्फोरस, मैग्नीशियम आयोडीन व कई खनिज, वसा और ऊर्जा वसा, और ऊर्जा देने वाले पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मौजूद होते है।

एफएसएसएआई की ओर से तय मापदंडो के तहत वास (फैट) और सॉलिड नॉट फैट (एसएनएफ) का प्रतिशत देखा जाता है नियम के अनुसार गाय के दूध में एसएनएस कम से कम 8.5% है। इन्ही मापदण्डो के आधार पर देश के पॉच राज्यों में उत्पादित दूध का औसत एसएनएफ 8.5% है। गोआ 8.9% कर्नाटक 8.5% मिजोरम 8.5व छत्तीसगढ 8.6% महाराष्ट्र 8.5% दूध का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा एसएनएफ होता है जिसमें विटामिन्स मिनरल, प्रोट्रीन कैल्शियम मैगनीशियम, पोटेशियम, इल्कटोस होते है।

आप सुबह रोज एक गिलास दूध व लस्सी व बादाम लस्सी पीकर जाये तो उसमें पूरे दिन का न्युट्रीशन होगा और दूध ही उसमें यह चीजे दे सकता है। सन 1950-60 में जब हम लोग 39 मिलियन टन धान पैदा कर रहे थे तब दूध का उत्पादन सिर्फ 17 मिलियन टन था । यानि कि राइस प्रोडक्शन का आधा था और आज हम लोग राइस से ज्यादा 137 मिलियन टन पैदा कर रहे है दिसम्बर 2019 तक इसकी 146 मिलियन टन हो जाने की सम्भावना है। आने वाले समय में हमारे देश में जो जरूरत है तो न्यूट्रीश्न सिक्युरिटी की डेरी सेक्टर को अगर हम आगे बढ़ाएगे तभी हमारा देश न्युट्रीशिन सिक्योर्ड होगा।

हमारे देश में विश्व के 40 प्रतिशत कुपोषित बच्चे है भारत सरकार व अन्य समाजसेवी सस्था का ये दायित्व बनता है कि गॉवो व शहरो में जाकर गर्भवती माताओं को बताना होगा कि शुरू के 1,000 दिन का पोषण उनका न्युट्रीशन है जिसका प्रभाव बच्चे पर पूरी उम्र पडता है। यदि बच्चे को 1,000 दिन में बच्चे को पौष्टिक पदार्थ नही दिया गया अच्छा खाना नही दिया तो उसका शारीरिक व बौद्धिक विकास रूक जाता है।

दूधारू पशुओं में पाये जानी वाली मस्टाइटिस बीमारी से हर साल डेरी उद्योग को 3800 करोड का नुकसान होता है। वर्ष 2022-23 में लम्पी बीमारी से डेयरी उद्योग को काफी नुकसान हुआ। नेशनल ब्यूरो ऑफ एनिमल जेनेटिक रिसोसेज, करनाल (एनबीजीआरआई) ने अपने शोध में इसे सच पाया। 22 प्रजाति के देसी नस्ल की गायो पर शोध के बाद संस्थान ने पाया कि इनमें से पांच प्रजातियों लाल सिंधी, साहीवाल, थरपाकर, गिर और राठी सर्वाधिक दूध देती हैं उनका दूध सौ फीसद ए-2 प्रकार का होता हैं अन्य में यह मात्रा 97 फीसदी तक होती हे। पर जर्सी एवं फ्रीजियन में यह महज 60 फीसदी ही है। ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइसेज जैसे देश के कुछ शीर्ष चिकित्सकीय संस्थाओं ने भी अपने शोध में देसी प्रजाति की गायों के दूध को बेहतर माना है।

इसके साथ ही राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान बीकानेर राजस्थान द्वारा उटनी का दूध भी लोगो को पीने के लिये पाउडर में उपलब्ध करा दिया गया है ऊटनी का दूध पीने से व्यक्ति कई बीमारीयों से बचता है। गाय व भैस के साथ ऊटनी का दूध भी मिल्क पावडर के रूप में बाजार में उपलब्ध है। सयुक्त राष्ट्र के खाद्य व कृषि संगठन के अनुमान के अनुसार ऊटनी के दूध का बाजार लगभग 5 अरब अमरिकी डॉलर हो सकता है। कई देशो में ऊटनी के दूध की काफी डिमाण्ड है भारत में राष्ट्रीय ऊट अनुसंधान केन्द्र बीकानेर ऊट के दूध से आईसक्रीम दूध व खीर का उत्पादन कर रहा है। तथा कुछ कम्पनियां दूध से चाकलेट भी बना रही है।

दूध की मांग अधिक होने के कारण सफेद पोस अपराधी संगठित होकर डेरी व्यवसाय को भी दूषित कर दिया है, डेरी व्यवसाय में आज कल दूध में डिटर्जेंट की मिलावट वनस्पति तेल व अन्य प्रकार के तेलो को मिलाया जाता है डिटर्जेंट से सिंथेटिक दूध तैयार किया जाता है।

दूध उत्पादन में दूध से बनने वाले घी में भी मिलावट की जाती है । वनस्पति तेल हाइड्रोजनी की मिलावट की जाती है। दूध उपभोक्ता को कम गुंणवता तथा मिलावटी दूध का सामना करना पडता है इसकी वजह से आर्थिक व शारीरिक नुकसान हो रहा है । कुछ लोग दूध में मिलावट करने का काम करते है दूध में हानिकारक रासायनो के साथ उर्वरक, अमोनियम, लवण, पोटेशियम सल्फेट, कास्टिक सोडा,डिटर्जेंट, सुक्रोज, न्यूट्रलाइजर और यूरिया आदि को मिलाकर इसकी छवि को खराब कर दिया है। ऐसे लोगो को भारत सरकार द्वारा दूध में मिलावट रोकने के लिए कडा कानून बनाया गया है। कई राज्य सरकारों ने मिलावट खोरो के खिलाफ अभियान चलाया है तथा राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार करकर जेल भेजा है। दूध में मिलावट करने वाले लोग अपने देश के साथ अपनी देश की जनता के साथ गदारी व धोखा करते है। ऐसे लोगो के खिलाफ भारतीय दण्ड सहिता के तहत 420 का मुकदमा दर्ज होना चाहियें। और आयकर विभाग को इन लोगो की सम्पति को सीज करना चाहियें। महाराष्ट्र सरकार द्वारा मालवानी हुंच मिलावट वाले मामले में आरोपियों पर हत्या की धारा 302 लगाई है देश की सर्वोच्च न्यायालय ने भी कहा कि दूध में मिलावट करने वालो को सजा उम्र कैद की सजा मिलना चाहिये। आज कल गाय, भैसों की ब्रिकी व जानकारी ऑनलाईन भी हो रही है।

भारत सरकार डेयरी उद्योग में निवेश को सरकार फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री की तरह आयकर की धारा 80-बी की उपधारा (11ए) क तहत मिलने वाले लाभ मुहैया कराए तो यह उद्योग के लिए काफी हितकारी होगा। इसके तहत डेयरी उद्योग अपने प्रोसोसिंग कारोबार, संरक्षण और पैकेजिंग आदि से हुए मुनाफे पर टैक्स हॉली-डे का लाभ ले सकेगें। डीआरडीओ इंदौर द्वारा दूध की गुणवत्ता जॉचने के लिये किट तैयार की है जो कुछ ही सैकेण्ड में क्या मिलावट है बता देगी । राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्था करनाल हरियाणा द्वारा दूध में मिलावट रोकने के लिए किट तैयार की गई है।

1 जून विश्व दुग्ध दिवस

लेखक/ विद्यावाचस्पति डॉक्टर अरविन्द प्रेमचंद जैन

दूध एक परिपूर्ण एवं संतुलित आहार हैं .इसकी उपयोगिता जन्म से शुरू होती हैं .पर वर्तमान में उत्पादन और खपत के अनुपात में बहुत अधिक अंतर होने से नकली दूध से जघन्य बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं .इस पर नियंत्रण करना अत्यंत आवश्यक हैं संयुक्त राष्ट्र के खा द्य और कृषि संगठन ने साल 2001 में 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में चुना था, इस दिन डेयरी क्षेत्र में स्थिरता, आर्थिक विकास, आजीविका और पोषण के बारे में लोगों को बताया जाता है। विश्व दुग्ध दिवस मनाने वाले देशों की संख्या हर साल तेजी से बढ़ रही है।

इस दिन की स्थापना 2001 में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन द्वारा की गई थी। इस वर्ष समारोह की शुरुआत 29 मई-31 को एन्जॉय डायरी रैली के साथ हुई, जिसका समापन मंगलवार (1 जून) को विश्व दुग्ध दिवस के साथ हुआ। दूध में मूल्यवान पोषक तत्व होते हैं और यह कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसका सेवन न केवल बढ़ते बच्चे बल्कि सभी आयु वर्ग के लोग भी करते हैं। यह हमारे दैनिक आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका बहुत पौष्टिक मूल्य है और कैल्शियम, प्रोटीन और वसा आदि का एक समृद्ध स्रोत है। मुख्य रूप से हमें गायों, भैंसों और भेड़, बकरियों और ऊंटों जैसे अन्य जानवरों से दूध मिलता है।

हमारे आहार में दूध के महत्व के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए हर साल 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस मनाया जाता है। बाजार में कई तरह के दूध मिलते हैं लेकिन कौन सा दूध सेहत के लिए अच्छा होता है? क्या आपको इस बारे में पता है?

विश्व दुग्ध दिवस का विषय पर्यावरण, पोषण और सामाजिक-अर्थशास्त्र के संदेशों के साथ डेयरी क्षेत्र में स्थिरता पर केंद्रित हैं

2020 का व्यापक विषय विश्व दुग्ध दिवस की 20 वीं वर्षगांठ था। यह दिन स्वास्थ्य और पोषण, प्रभावशीलता और प्राप्यता, और क्षेत्रों के जुनून और हमारे समुदायों को खिलाने की प्रतिबद्धता से संबंधित डेयरी उत्पादों के लाभों को प्रोत्साहित करता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत में ग्रामीण या कृषि क्षेत्रों के परिवार दूध और दुग्ध उत्पादों का विभिन्न रूपों जैसे ताजा दूध, घी, छाछ, दही, मिठाई आदि का सेवन करते हैं। वे दूध को बड़े बर्तन में उबालकर उसका सेवन करते हैं। इसके अलावा, कुछ परिवारों में अपने मेहमानों को बड़े गिलास में लस्सी परोसने की परंपरा है।

इतिहास

विश्व दुग्ध दिवस पहली बार 2001 में पूरे विश्व में मनाया गया था और कई देशों ने इस आयोजन में भाग लिया था। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने 2001 में 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में चुना, जो स्थिरता, आर्थिक विकास, आजीविका और पोषण में डेयरी क्षेत्र के योगदान का जश्न मनाता है। वास्तव में, भागीदारी के लिए देशों की संख्या साल दर साल बढ़ रही है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस दिन से संबंधित कई गतिविधियों का आयोजन किया गया है। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, विश्व दुग्ध दिवस दूध के पोषक मूल्य और इसे आहार में शामिल करने की आवश्यकता के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है।

उद्देश्य

- मनुष्य के जीवन में दूध की आवश्यकता और महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करना।

- दूध और दूध उत्पादों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए इस दिन विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

- कई उद्योगों, अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवन में दूध और डेयरी उत्पादों के योगदान का जश्न मनाने के लिए।

- दूध में मौजूद पोषक तत्वों जैसे कैल्शियम, प्रोटीन, विटामिन बी2, पोटेशियम आदि के बारे में लोगों को शिक्षित करना।

- जनता द्वारा विभिन्न प्रचार गतिविधियाँ की जाती हैं।

महत्व

विश्व दुग्ध दिवस मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य लोगों को एक व्यक्ति के जीवन में दूध के महत्व के बारे में जागरूक करना है। यह पहला भोजन है जो बच्चा जन्म के बाद खाता है और शायद जीवन भर सेवन किया जाने वाला भोजन है। वास्तव में, यह किसी भी जीवित प्राणी के लिए पहला भोजन है जिसने दुनिया में जन्म लिया और खिलाया गया। तो, यह बहुत महत्वपूर्ण है। मानव शरीर के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्व दूध में मौजूद होते हैं। डेयरी क्षेत्र स्थिरता, आर्थिक विकास, पोषण और आजीविका में योगदान देता है। क्या आप जानते हैं कि डेयरी क्षेत्र दुनिया भर में एक अरब लोगों की आजीविका का समर्थन करता है?

इसलिए, विश्व दुग्ध दिवस विभिन्न देशों द्वारा मनाया जाने वाला एक वार्षिक कार्यक्रम है जो लोगों को दूध के सेवन के महत्व के बारे में शिक्षित करता है। दूध में विभिन्न पोषक तत्व होते हैं जो शरीर के विकास के लिए आवश्यक होते हैं। यह हड्डियों को मजबूत बनाता है और हमें ऊर्जा प्रदान करता है। यह यादगाश में सुधार के लिए भी अच्छा है।

गाय के दूध में प्रति ग्राम 3.14 मिली ग्राम कोलेस्ट्रॉल होता है। आयुर्वेद के अनुसार गाय के ताजा दूध को ही उत्तम माना जाता है।

गाय का दूध पतला होता हे जो शरीर मे आसानी से पच जाता । जो लोग कम खाया करते हे उनके लिए गााय का दूध बढ़िया रहता है।

दूध एक पूर्ण, स्वच्छ, स्तन ग्रन्थियों का झारण है। पौष्टिकता की दृष्टि से दूध एक मात्र सम्पूर्ण आहार है जो हमको प्रकृति की देन है। हमारे शरीर को लगभग तीस से अधिक तत्वों की आवश्यकता होती है। कोई भी अकेला पेय या ठोस भोज्य पदार्थ प्रकृति में उपलब्ध नहीं है जिससे इन सबको प्राप्त किया जा सके। परन्तु दूध से लगभग सभी पोषक तत्व प्राप्त हो जाते हैं। इसलिए बच्चों के लिए सन्तुलित व पूर्ण भोजन का स्तर दिया गया है। दूध में मौजूद संघटक हैं पानी, ठोस पदार्थ, वसा, लैक्टोज, प्रोटीन, खनिज वसाविहिन ठोस। अगर हम दूध में मौजूद पानी की बात करें तो सबसे ज्यादा पानी गधी के दूध में 91.5% होता है, घोड़ी में 90.1%, मनुष्य में 87.4%, गाय में 87.2%, ऊंटनी में 86.5%, बकरी में 86.9% होता है।

पहलवानों का आमरण अनशन इंडिया गेट पर?

(लेखक-सनत जैन)

महिला पहलवानों ने अपने मेडल गंगा जी को समर्पित करने के बाद इंडिया गेट में आमरण अनशन करने की मंशा जताते हुए 3 पेज का पत्र सार्वजनिक किया। खिलाड़ियों ने अपने पत्र में उल्लेख किया, जिस तरह सेना दुश्मनों से लड़ती है। तब वह अपने प्राणों की चिंता नहीं करती है। ठीक उसी तरह जब हम खेलते हैं। तो देश के लिए खेलते हैं। उस समय हमें भी अपने प्राणों की कोई चिंता नहीं होती है। खिलाड़ियों और सेना के जवानों की भावना देश के लिए होती है। जिस तरह से अंतर्राष्ट्रीय मेडल जीत चुके पहलवानों को घसीट कर थाने ले जाया गया । उसके बाद खिलाड़ियों पर फर्जी मुकदमे दर्ज किए गए राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने चुप्पी साध रखी है। धरना स्थल से प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के निवास 2 किलोमीटर दूर होते हुए भी, महिला खिलाड़ियों को यौन उत्पीड़न के मामले में न्याय नहीं मिला। उल्टे यौन उत्पीड़न करने वाला बृजभूषण सिंह संसद के उद्घाटन समारोह में शामिल हुआ। यह महिला खिलाड़ियों का दर्द था। प्रधानमंत्री हमें घर की बेटियां बताते थे। उन्होंने भी हमारी सुध नहीं ली। उल्टे बृजभूषण सिंह को संसद में बुलाकर महिला खिलाड़ियों की भावनाओं को आहत किया। खिलाड़ियों ने अपने पत्र में पवित्र मेडल की जगह पवित्र गंगा को मानते हुए, गंगा में प्रवाहित करने का निर्णय लेकर इंडिया गेट में आमरण अनशन करने की बात पत्र में लिखी। खिलाड़ियों ने सारे देश की जनता से कहा, न्याय की गुहार में जब न्याय नहीं मिला, तो आमरण अनशन के माध्यम से शरीर त्यागने के अलावा उनके साथ अन्य कोई विकल्प नहीं बचा है। महिला खिलाड़ियों का मानना है, कि देश मे कानून का राज नहीं रहा। न्यायालयों से भी न्याय नहीं मिल रहा है। पहली बार देश में इतनी निराशा और इतना भय का वातावरण देखने को मिल रहा है। महिला खिलाड़ी यह मानकर चल रही हैं, कि देश में उनके लिए कुछ नहीं बचा है। वह अपना मेडल प्रवाहित करने हरिद्वार पहुंच गई। किसान नेता नरेश टिकैत खबर मिलते ही हरिद्वार पहुंचे। उन्होंने महिला खिलाड़ियों से 5 दिन इंतजार करने को कहा। उन्होंने खिलाड़ियों को इस बात के लिए मनाया, कि वह इंतजार करें। उन्होंने खिलाड़ियों के सारे मेडल अपने पास रखे। राकेश टिकैत का भरोसा मिलने पर खिलाड़ी हरिद्वार से वापस अपने घर लौटे। वहीं दिल्ली पुलिस ने स्पष्ट कर दिया है, कि इंडिया गेट पर अनशन करने की अनुमति खिलाड़ियों को नहीं दी जाएगी। जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक, खाप पंचायतें, विशेष रुप से खाप पंचायतों की महिलाएं,महिला खिलाड़ियों की पक्ष में जोर शोर से आकर खड़ी हो गई है। महिला खिलाड़ियों को 24 राजनीतिक दलों के साथ-साथ हर वर्ग का समर्थन मिला है। किसानों की ओर से कहा गया है, कि वह दिल्ली में सब्जी और दूध की सप्लाई बंद कर देंगे। राकेश टिकैत ने 5 दिन का समय महिला खिलाड़ियों से मांगा है। इसके पीछे शायद यह मंशा होगी, कि इन 5 दिनों में बृजभूषण सिंह को पुलिस गिरफ्तार करेगी। महिला खिलाड़ियों के ऊपर जो मुकदमा जंतर मंतर से संसद कूच करने के विरोध में दर्ज हुआ है। वह सरकार वापस ले लेगी। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो किसान आंदोलन के नेता पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक, सभी 24 विपक्षी राजनीतिक दल महिला खिलाड़ियों के समर्थन में लोकतंत्र और न्याय तंत्र को बचाने अन्ना आंदोलन से बड़ा आंदोलन खड़ा करने की तैयारी शुरु हो गई हैं। महिला खिलाड़ियों के आंदोलन ने जनमानस, विशेष रुप से देश की महिलाओं को उद्वेलित कर दिया है। सरकार ने यदि जल्द ही कोई कदम नहीं उठाया, तो अन्ना आंदोलन की तरह एक बार फिर देश में लोकतंत्र और न्याय तंत्र को मजबूत बनाने के लिए जनमानस सड़कों पर उतर सकता है। खिलाड़ियों के आंदोलन से जनमानस उल्लेखित है। मोदी मीडिया से ज्यादा प्रभावी सोशल मीडिया हो गया है। मोदी मीड़िया को यू-टयूब के चैनल कड़ी चुनौती दे रहे है। यू -टयूब के कई चैनलों को विश्वसनीयता ज्यादा है। मोदी मीडिया में सभी समाचारों का प्रसारण नहीं होने से यू-टयूबी के चैनल आम जनता के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। सरकार मोदी मीडिया पर आश्रित है। इसकी विश्वसनीयतआम जनता के बीच नहीं रही। सरकार को समय रहते वास्तविक स्थिति से जुड़ना चाहिये। आपातकाल में इंदिरा सरकार ने सेंसर शिप लागू की थी। सेंसरशिप के परिनाम स्वरुप इंदिरा को सत्ता गंवाना पड़ी। मीडिया में जो अघोषित सेंसरशिप है। वह आपातकाल से ज्यादा प्रभावी साबित हो रही है। सरकार के कानों में सत्य पहुंच नहीं रहा है। मोदी मीडिया वहीं दिखा रहा है, जो सत्ता में बैठे लोग देखना चाहते है। यह स्थिति सरकार और जनता दोनों के लिय अच्छी नहीं कही जा सकती है। सरकार को संवेदनशील होने की जरुरत है।

मुक्ता गिरी जैन सिद्ध क्षेत्र

जहां आज भी होती है केसर-चंदन की वर्षा

दिगंबर जैनियों का सिद्धक्षेत्र भारत के मध्य में, महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है मुक्ता गिरी। मुक्ता गिरी मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में आता है। सतपुड़ा पर्वत की श्रृंखला में मन मोहनेवाले घने हरे-भरे वृक्षों के बीच यह क्षेत्र बसा हुआ है। जहां से साढ़े तीन करोड़ मुनिराज मोक्ष गए हैं। इसीलिए कहा जाता है -

अचलापूर की दिशा ईशान तहां मेंढागिरी नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोटी मुनीराय तिनके चरण नमु चितलाय।।

जहां 250 फुट की ऊंचाई से जलधारा गिरती है। जिससे जलप्रपात निर्मित हुआ है। निसर्ग के हरे-भरे उन दृश्यों एवं पहाड़ों को देखकर हर मन प्रफुल्लित हो जाता है। इस स्थान को मुक्तागिरी के साथ-साथ मेंढागिरी भी कहा जाता है।

मुक्ता गिरी का इतिहास : एलिचपूर यानी अचलपुर में स्थित मुक्ता गिरी सिद्धक्षेत्र को स्व. दानवीर नत्थुसा पासुसा कळमकर ने अपने साथी स्व. रायसाहेब रूखबसंगई तथा स्व. गेंदालालजी हीरालालजी बड़जात्या के साथ मिलकर अंग्रेजों के जमाने में खापर्डे के मालगुजारी से सन् 1928 में यह मुक्तागिरी पहाड़ मंदिरों के साथ खरीदा था। इस मुक्ता गिरी सिद्धक्षेत्र का इतिहास काफी रोमहर्षक है।

कहा जाता है कि उस समय शिकार के लिए पहाड़ पर जूते-चप्पल पहन कर जाते थे और जानवरों का शिकार करते थे। इसी वजह से, पवित्रता को ध्यान में रखते हुए यह पहाड़ खरीदा गया।

निर्वाण कांड में उल्लेख है कि इस क्षेत्र पर दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का समवशरण आया था। इसीलिए कहा जाता है कि मुक्ता गिरी पर मुक्ता बरसे। शीतलनाथ का डेरा। ऐसा उस वक्त मोतियों की वर्षा होने से इसे मुक्तागिरी कहा जाता है।

एक हजार वर्ष पूर्व मंदिर क्रमांक दस के पास ध्यान मग्न मुनिराज के सामने एक मेंढा पहाड़ की चोटी से गिरा। मुनिराज ने उसके कान में णमोकार मंत्र का उच्चारण किया। वह मेंढा मृत्यु के बाद स्वर्ग में देवगति प्राप्त होते ही मुनि महाराज के दर्शन को आया। तब से हर अष्टमी और चौदस को यहां केसर-चंदन की वर्षा होती है। इसी समय से इसे मेंढागिरी भी कहा जाता है।

जानिए धारकुंडी के सौंदर्य की महिमा

जहां पहाड़ों से बहती जल की धारा

कटनी-इलाहाबाद रेल मार्ग में सतना से 70 किलोमीटर दूर धारकुंडी में प्रकृति और अध्यात्म का अनुपम मिलन देखने को मिलता है। सतपुड़ा के पठार की विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित धारकुंडी में प्रकृति की अनुपम छटा देखने को मिलती है।

पर्वत की कंदराओं में साधना स्थल, दुर्लभ शैल चित्र, पहाड़ों से अनवरत बहती जल की धारा, गहरी खाईयां और चारों ओर से घिरे घनघोर जंगल के बीच महाराज सच्चिदानंद जी के परमहंस आश्रम ने यहां पर्यटन और अध्यात्म को एक सूत्र में पिरो कर रख दिया है। यहां बहुमूल्य औषधियां और जीवाश्म भी पाए जाते हैं। माना जाता है कि महाभारत काल में युधिष्ठिर और दक्ष का प्रसिद्ध संवाद यहीं के एक कुंड में हुआ था जिसे अघमर्षण कुंड कहा जाता है। यह कुंड भूतल से करीब 100 मीटर नीचे है। धारकुंडी मूलतः दो शब्दों से मिलकर बना है। धार तथा कुंडी यानी जल की धारा और जलकुंड। विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के दो पर्वत की संधियों से प्रस्फुटित होकर प्रवाहित होने वाली जल की निर्मल धारा यहां एक प्राकृतिक जलकुंड का निर्माण करती है।

समुद्र तल से 1050 फुट ऊपर स्थित धारकुंडी में प्रकृति का स्वर्गिक सौंदर्य आध्यात्मिक ऊर्जा का अक्षय स्रोत उपलब्ध कराता है। यहां जनवरी में जहां न्यूनतम तापमान 2 से 3 डिग्री रहता है वहीं अधिकतम तापमान 18 डिग्री रहता है। जून माह में न्यूनतम 20 डिग्री तथा अधिकतम तापमान 45 डिग्री रहता है।

योगिराज स्वामी परमानंद जी परमहंस जी के सान्निध्य में सच्चिदानंद जी ने चित्रकूट के अनुसूया आश्रम में करीब 11 वर्ष साधना की। इसके बाद सच्चिदानंद जी महाराज 1956 में यहां आए और अपनी आध्यात्मिक शक्ति से यहां के प्राकृतिक सौंदर्य को आश्रम के माध्यम से एक सार्थक रूप दिया। उनके आश्रम में अतिथियों के लिए रहने और भोजन की मुफ्त में उत्तम व्यवस्था है।

विशेष है कि महाराज जी अपने खेतों में उपजे अन्न से ही अपने आगंतुकों को भोजन कराते हैं। भागम-भाग भरे जीवन के बीच कुछ दिन यहां आकर व्यक्ति को अध्यात्म और शांति का अनुपम अनुभव हो सकता है।

प्रकृति प्रेमी आध्यात्मिक लोग मध्य प्रदेश के सतना से यहां आ सकते हैं। सतना से प्रतिदिन एक बस यहां जाती है। इसके अलावा सतना के बस स्टैंड में स्थित परमहंस आश्रम की शाखा से भी यहां जाने के लिए जानकारी मिल सकती है। घनघोर जंगल, पर्वतों और झरनों के बीच स्थित परमहंस आश्रम में साधना के लिए योगी पुरुषों का आवागमन होते रहता है।

यहां आकर जीवन ठहर सा जाता है। मन को सुकून मिलता है। यहां के प्राकृतिक सौंदर्य का तो कोई जवाब नहीं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है यहां का परमहंस आश्रम। पूज्य सच्चिदानंद जी के अध्यात्म ने धारकुंडी के सौंदर्य की महिमा को दैवीय बना दिया है। जिसका अनुभव प्रकृति प्रेमी व्यक्तियों को जरूर लेना चाहिए।

नर्मदा के उत्तरी तट पर बसा धाराजी

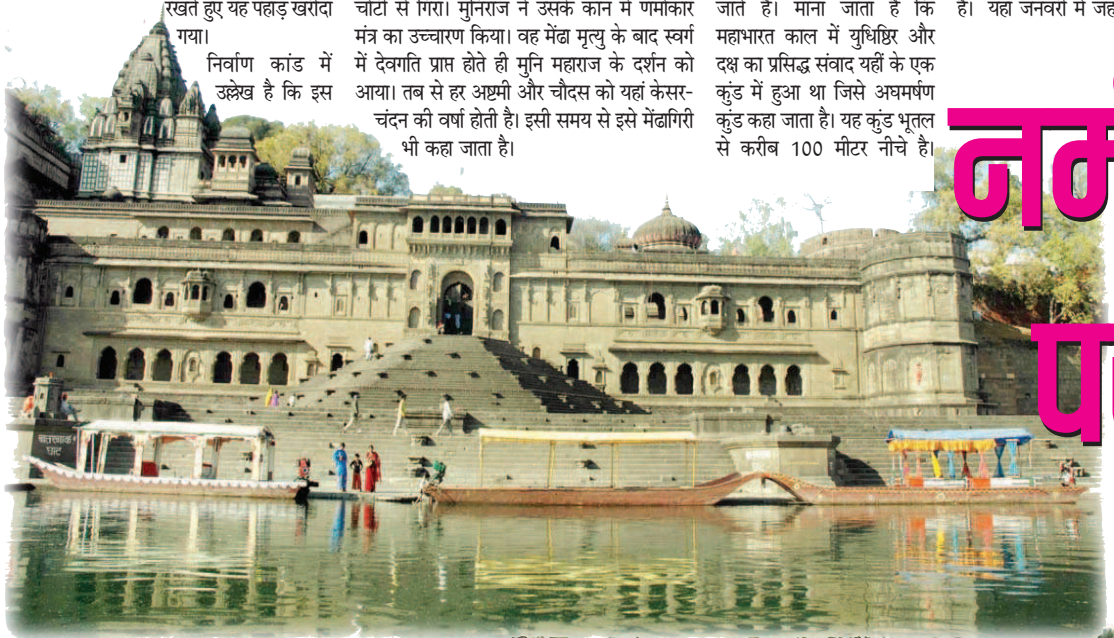

देश में काशी ज्ञानभूमि, वृंदावन प्रेमभूमि और नर्मदा तट को तपोभूमि माना जाता है। संत डोंगरेजी महाराज गंगा में स्थान करने, जमुना में आचमन करने और नर्मदा के दर्शन करने का समान फल मानते थे।

पौराणिक और दर्शनीय स्थल धावड़ी कुंड

मालवावासी जिसे धाराजी के नाम से जानते हैं, वह धावड़ी कुंड देवास जिले का महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यहां संपूर्ण नर्मदा 50 फुट से गिरती है, जिसके फलस्वरूप पत्थरों में 10-15 फुट व्यास के गोल (ओखल के आकार के) गड्ढे हो गए हैं। बहकर आए पत्थर इन गड्ढों में गिरकर पानी के सहारे गोल-गोल घूमते हैं, जिससे घिस-घिसकर ये पत्थर शिवलिंग का रूप ले लेते हैं।

ऐसा लगता है जैसे नर्मदा स्वयं अपने आराध्य देव को आकार देकर सतत उनका अभिषेक करती हो। इन्हें बाण या नर्मदेश्वर महादेव का नाम दिया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि धाराजी के स्वयंभू बाणों की प्राण-प्रतिष्ठा करना आवश्यक नहीं, ये स्वयंभू होकर प्राण-प्रतिष्ठित होते हैं।

इसी धाराजी पर चैत्र की अमावस पर मालवा, राजस्थान तथा निमाड़वासियों का प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें लगभग लाखों श्रद्धालु हिस्सा लेते हैं।

नर्मदाजी का यह सबसे बड़ा जलप्रपात वन प्रदेश में स्थित है। जलप्रपात से उत्तर में लगभग 10 कि.मी. पर सीता वाटिका, जिसे सीता वन भी कहते हैं, में सीता मंदिर भी स्थित है।

कहा जाता है कि यहा महर्षि वाल्मीकि का आश्रम था और सीताजी ने यहां निवास किया था। यहां पर 64 योगिनियों और 52 भैरवों की विशाल मूर्तियां भी हैं। समीप ही सीताकुंड, रामकुंड और लक्ष्मणकुंड हैं।

सीताकुंड में हमेशा पेयजल उपलब्ध रहता है। सीता वाटिका से 16 कि.मी. पूर्व में कनेरी माता(जनश्रुति में जयंती माता) का मंदिर है, जिसकी तलहटी में कनेरी नदी बहती है, जिसमें विभिन्न रंगों की कनेर की झाड़ियां हैं।

यह स्थान पूर्णतः घने जंगल में से होकर यहां हिंसक पशुओं का वास भी है। सीतावाटिका से 6 कि.मी. की दूरी पर सीता खोह भी है, जिसके आसपास दुर्घटना से बचाव के लिए कंटीले तार लगा दिए गए हैं, जो इतनी गहरी है कि नीचे झांकने पर तलहटी नदी दिखाई देती है और पत्थर डालने पर आवाज नहीं आती है।

सीता वाटिका से लगभग 10 कि.मी. उत्तर में वनप्रदेश के रास्ते पोटला गांव (देवास जिला) से 1 कि.मी. की दूरी पर कावड़िया पहाड़ है।

जनश्रुति है कि महाभारतकाल में इस वन प्रदेश में पांडवों ने अज्ञातवास हेतु भ्रमण किया था और भीम ने 3 फुट व्यास के 10 से 30 फुट लंबी कॉलम-बीम आकार के लौह-मिश्रित पत्थर इकट्ठे किए थे, जो सात स्थानों पर सात पहाड़ियों के रूप में हैं। इन पहाड़ियों की ऊंचाई 40-45 फुट की है।

प्रसिद्ध पुरातत्वविद प्रो. वाकणकर ने भी पहाड़ियों के इन पत्थरों का अनुसंधान किया था। भीम का उद्देश्य इन पत्थरों से सात महल बनाने का रहा होगा, ऐसा माना जाता है। नर्मदा परिक्रमा करने वाले धावड़ीकुंड से चल कर इन पौराणिक और दर्शनीय स्थानों का भ्रमण करते हुए तरानीया, रामपुरा, बखतगढ़ होते हुए चौबीस अवतार जाते हैं।

पुरातत्व, पर्यावरण, वनभ्रमण की दृष्टि से कावड़िया पहाड़, कनेरी माता, सीताखोह और धावड़ीकुंड (धाराजी) आकर्षण का केंद्र हैं, वही विहंगम दृश्यावलियों से पूर्ण पर्यटन स्थल है।

रुपया बढ़त के साथ बंद

नई दिल्ली । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया दो पैसे की बढ़त के साथ 82.69 पर बंद हुआ। वहीं शुरुआती कारोबार में रुपया तीन पैसे नीचे आकर 82.70 प्रति डॉलर पर आ गया। स्थानीय शेयर बाजारों के कमजोर रुख से भी रुपये पर प्रभाव पड़ा है। फॉरेक्स डीलरों ने कहा कि कच्चा तेल 75 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आया है जिससे भी रुपये पर दबाव आया है। सुबह अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.71 प्रति डॉलर पर खुला। वहीं बाद में यह 82.73 प्रति डॉलर पर आ गया और फिर 82.68 प्रति डॉलर पर खिसक गया। रुपया 82.70 प्रति डॉलर पर कारोबार कर रहा था। वहीं गत दिवस रुपया 82.67 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इसी बीच छह अन्य मुद्राओं की तुलना में डॉलर सूचकांक 0.14 फीसदी बढ़कर 104.32 पर पहुंच गया जबकि ब्रेंट कच्चा तेल वायदा 0.26 फीसदी नीचे आकर 73.35 प्रति डॉलर पर कारोबार कर रहा था।

यूपीआई की सफलता के बाद एलपीएसएस सिस्टम लाने की तैयारी में आरबीआई

मुंबई । यूपीआई की सफलता के बाद केंद्रीय बैंक एक नया पेमेंट सिस्टम लाने की तैयारी में है। आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक प्रस्तावित नए पेमेंट सिस्टम का नाम 'लाइट वेट एंड पोर्टेबल पेमेंट सिस्टम' (एलपीएसएस) होगा। नया पेमेंट सिस्टम पारंपरिक टेक्नोलॉजी से पूरी तरह से अलग होगा और बहुत ही कम कर्मचारी कहीं से भी ऑपरेट कर सकते है। एलपीएसएस पेमेंट सिस्टम इसलिए भी खास होगा क्योंकि इसके माध्यम से किसी भी परिस्थिति में पेमेंट सेटलमेंट हो सकेगा। यह पेमेंट सिस्टम आरटीजीएस, एनईएफटी और यूपीआई जैसी मौजूदा भुगतान प्रणालियों से पूरी तरह से स्वतंत्र होगा। आरबीआई ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि प्राकृतिक आपदाओं और युद्ध जैसी भयावह घटनाओं में ये प्रणालियां अस्थायी रूप से बंद हो सकती हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए एलपीएसएस पेमेंट सिस्टम को तैयार करने की परिकल्पना की गई है। रिपोर्ट में कहा गया कि मौजूदा पारंपरिक पेमेंट सिस्टम को निरंतर बड़ी मात्रा में भुगतान करने के लिए डिजाइन किया गया है। नतीजतन, ये सिस्टम्स उन्नत आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर और जटिल तारों के नेटवर्क पर निर्भर हैं। जबकि इसके विपरीत एलपीएसएस को भुगतान प्रणालियों में 'बंकर समतुल्य' के रूप में देखा जाता है और यह उसतरह के लेनदेन को संसाधित करेगा जो अर्थव्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि सरकार और बाजार से संबंधित लेनदेन।

गो फर्स्ट ने 4 जून तक कर दीं अपनी उड़ानें रद्द

एयरलाइन के भविष्य को लेकर अनिश्चितता बरकरार

नई दिल्ली । एयरलाइन गो फर्स्ट ने भविष्य को लेकर अनिश्चितता के बीच अपनी उड़ानें 4 जून तक रद्द कर दी हैं। संकट में फंसी एयरलाइन ने यह कदम उठाया है। गो फर्स्ट ने सबसे पहले 3 मई को अपनी उड़ानें बंद कर दी थीं। ताजा घोषणा के बाद किफायती सेवाएं देने वाली एयरलाइन की उड़ानें एक माह तक ठप रहेंगी। एयरलाइन गो फर्स्ट ने दो मई को घोषणा की थी कि वह 5 मई तक 3 दिन के लिए अपनी उड़ानें रद्द कर रही है। एयरलाइन ने मंगलवार को ट्वीट किया कि हम यह सूचित करते हुए खेद है कि गो फर्स्ट की अनुसूचित उड़ानें चार जून तक रद्द कर दी गई हैं। एयरलाइन के अधिकारियों ने कहा है कि यात्रियों को उनकी टिकट का पूरा पैसा वापस किया जाएगा। एयरलाइन ने कहा है कि वह जल्द बुकिंग फिर शुरू करेगी।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 347 अंक, निफ्टी 99 अंक नीचे आया

मुम्बई । शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के कारण बिकवाली हावी होने से बाजार नीचे आया है। सप्ताह के तीसरे कारोबारी दिन बाजार गिरावट के साथ ही लाल निशान पर बंद हुआ। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 346.89 अंक करीब 0.55 फीसदी फिसलकर 62,622.24 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 62,876.77 की ऊंचाई तक जाने के बाद 62,401.02 तक गिरा। दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 99.45 अंक तकरीबन 0.53 फीसदी नीचे आया। निफ्टी कारोबार के अंत में 18,534.40 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 18,603.90 की उंचाई तक गया और नीचे में 18,483.85 तक आया। कारोबार के दौरान सेंसेक्स के शेयरों में से 11 शेयर लाभ के साथ ही हरे निशान पर बंद हुए। भारती एयरटेल के शेयरों को सबसे अधिक 4.78 फीसदी तक लाभ हुआ। इसके अलावा टेक महिंद्रा, एशियन पेंट्स, सन फार्मा और टाटा मोटर्स सेंसेक्स के सबसे अधिक लाभ वाले शेयर रहे। वहीं सेंसेक्स के शेयरों में 19 शेयर नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए। एक्सिस बैंक के शेयर सबसे ज्यादा करीब 2.44 फीसदी तक गिरे, एसबीआई, रिलायंस, एचडीएफसी और एचडी बैंक सेंसेक्स के शेयर सबसे अधिक नुकसान में रहे। इससे पहले आज सुबह बाजार गिरावट पर खुला। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 250 अंक नीचे आकर 62,700 के स्तर पर कारोबार कर रहे था। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 77 अंक टूटकर 18550 के स्तर पर पहुंच गया है।सबसे ज्यादा बिकवाली बैंकिंग विशेषकर सरकारी बैंकिंग स्टॉक्स के शेयरों में हुई। एसबीआई का शेयर 2 फीसदी से ज्यादा गिरा।

सोने, चांदी की कीमतों में उछाल

नई दिल्ली । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आये उछाल से बुधवार को भारतीय बाजार में भी सोने-चांदी की कीमतें बढ़ी हैं। इससे दस ग्राम सोने की कीमतें बढ़कर 60,400 रुपये पहुंच गयीं। वहीं एक किलो चांदी की कीमतों में भी तेजी आई है और अब यह 72,750 रुपये पहुंच गयी है। दिल्ली सर्राफा बाजार में सोना 455 रुपये बढ़कर 60,400 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। वहीं गत कारोबारी सत्र में सोना 59,945 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ था। वहीं चांदी की कीमत भी 500 रुपये बढ़कर 72,750 रुपये प्रति किलोग्राम पहुंच गई। दिल्ली सर्राफा बाजार में सोने की हाजिर कीमत 450 रुपये की तेजी के साथ 60,400 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई।

देश में अब छोटे आकार की पेट्रोलियम रिफाइनरी लगाने की हो रही तैयारी

नई दिल्ली ।

सालाना उत्पादन क्षमता को हो सिल करने अब देश में छोटे आकार की रिफायनरी लगाने की तैयारी हो रही है। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को कहा कि देश में 45 करोड़ टन सालाना रिफाइनरी क्षमता हासिल करने के लिए छोटे आकार की पेट्रोलियम रिफाइनरी लगाने पर विचार किया जा रहा है। उद्योग मंडल इंडो-अमेरिकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित ऊर्जा सम्मेलन को संबोधित करते हुए पुरी ने कहा कि छोटी रिफाइनरियों के लिए चीजें आसान होती हैं। इसमें जमीन अधिग्रहण समेत अन्य बाधाएं नहीं होती। इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम की रिफाइनरी लगाने की योजना अटकने के बीच उन्होंने यह बात कही है। तीनों कंपनियों की महाराष्ट्र के रत्नागिरी में छह करोड़ टन सालाना क्षमता की रिफाइनरी लगाने की योजना है लेकिन वह आगे नहीं बढ़ पा रही है। फिलहाल देश में रिफाइनिंग क्षमता 25।2 करोड़ टन सालाना है। केन्द्रीय मंत्री के अनुसार बड़े आकार की रिफाइनरी लगाना महंगा सौदा बन गया है। हम प्रतिवर्ष दो करोड़ टन तक सालाना क्षमता वाली रिफाइनरियों पर गौर कर रहे हैं। इतनी क्षमता की रिफाइनरी छोटी होती हैं। अगर हम बड़े आकार की रिफाइनरी लगाने की योजना बनाते हैं, तब जमीन अधिग्रहण और अन्य मसले आएंगे। पेट्रोलियम मंत्री ने आगे कहा कि हमें 45 करोड़ टन सालाना क्षमता का लक्ष्य हासिल करने के लिए छोटे आकार की रिफाइनरियों के साथ कुछ और नीतिगत निर्णय लेने की जरूरत है। भारत आने वाले समय में ऊर्जा का केंद्र होगा और पर्यावरण अनुकूल दिशा में आगे बढ़ रहा है। हमें ऐसी रिफाइनरियों की जरूरत है, जो पेट्रोरसायन, हरित हाइड्रोजन आदि बनाएं। जैवईंधन के पेट्रोल, डीजल और विमान ईंधन में मिश्रण के बारे में उन्होंने कहा कि हर प्रकार के प्रयोग हो रहे हैं। यह सब बाजार में हो रहा है।

उम्मीद से बेहतर दिखी जीडीपी की रफ्तार, ड्रैगन से आगे निकला भारत

मार्च तिमाही में 6.1 फीसदी ग्रोथ

नई दिल्ली ।

इकॉनमी के मोर्चे पर मोदी सरकार के लिए अच्छी खबर है। जीडीपी के चौथी तिमाही के आंकड़े अनुमान से कहीं बेहतर रहे हैं। वित्तीय साल 2022-23 की जनवरी से मार्च तिमाही में जीडीपी ग्रोथ 6.1 प्रतिशत रही। साल 2022-23 में जीडीपी ग्रोथ 7.2 फीसदी रही। वित्तीय साल 2023 में इकॉनमी पहली तिमाही में 13.1 फीसदी, दूसरी तिमाही में 6.2 फीसदी और तीसरी तिमाही में 4.5 फीसदी बढ़ी। जानकारों ने जनवरी-मार्च 2023 तिमाही में जीडीपी ग्रोथ 4.9 से 5.5 फीसदी रहने का अनुमान जताया था। लेकिन यह अनुमानों से कहीं बेहतर रही। उम्मीद थी कि कृषि सेक्टर में मजबूती और डोमेस्टिक डिमांड बढ़ने से भारतीय अर्थव्यवस्था को सपोर्ट मिल सकता है। पश्चिमी देशों में मंदी की आशंका के बीच भारत ग्लोबल इकॉनमी के लिए ब्राइस स्पॉट बनकर उभरा है। यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी वाला देश जर्मनी मंदी में फंस चुका है, जबकि अमेरिका पर पहली बार डिफॉल्ट होने का खतरा दिख रहा है। वर्ल्ड बैंक और आईएमएफ (आईएमएफ) जैसी संस्थाओं का कहना है कि भारत में मंदी आने की संभावना न के बराबर है। जीडीपी के आंकड़े इसके गवाह हैं।

जीडीपी के आंकड़े राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) जारी करता है। एनएसओ के बुधवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2022-23 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 4.5 प्रतिशत थी। जीडीपी ग्रोथ रेट 2021-22 की जनवरी-मार्च तिमाही में चार प्रतिशत रही थी। आंकड़ों के अनुसार, पूरे वित्त वर्ष 2022-23 में आर्थिक वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रही। इससे पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में यह 9.1 प्रतिशत थी। ग्रॉस वैल्यू एडेड के प्रॉविजनल अनुमानों के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2023 में मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर की रफ्तार 1.3 प्रतिशत रही। वित्तीय वर्ष 2022 में इस सेक्टर की ग्रोथ 11.1 फीसदी रही थी। हालांकि एग्रीकल्चर, फोरेस्ट्री और फिशिंग की ग्रोथ 2023 में चार प्रतिशत रही जबकि 2022 में इनकी रफ्तार 3.5 फीसदी रही थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने दूसरे अग्रिम अनुमान में देश की वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने की संभावना जताई थी। सकल घरेलू उत्पाद देश की सीमा के भीतर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य को बताता है। चीन की आर्थिक वृद्धि दर 2023 की पहली तिमाही में 4.5 प्रतिशत रही थी।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने चौथी तिमाही में जीडीपी ग्रोथ 2022-23 के 5.1 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था। आरबीआई के गर्वनर शक्तिकांत दास ने हाल में कहा था कि अगर भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट सात प्रतिशत से अधिक रहती है, तब उन्हें हैरानी नहीं होगी। किसी भी देश के लिए जीडीपी के आंकड़े अहम होते हैं क्योंकि वे देश की इकॉनमी की सेहत बयां करते हैं। इनसे पता चलता है कि इकॉनमी कैसा प्रदर्शन कर रही है और आर्थिक गतिविधियां कैसी हैं। इन्हीं आंकड़ों के आधार पर नीतियां बनाई जाती हैं।

विदेशी करेंसी को बेचने से आरबीआई को हुई बंपर कमाई, सरकार को मिला मोटा लांभाश

केंद्रीय बैंक की बैलेंस शीट भी काफी मजबूत हो गई

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वित्तवर्ष 2022-23 में बंपर कमाई की है और मोदी सरकार को भी खूब पैसा दिया। आरबीआई की कमाई में सबसे ज्यादा हिस्सेदारी विदेशी करेंसी को बेचने की रही है। आरबीआई ने अपनी सालाना रिपोर्ट में बताया है कि उसे बीते वित्तवर्ष में 47 फीसदी ज्यादा कमाई हुई। यह उससे पहले के वित्तवर्ष के मुकाबले करीब डेढ़ गुना पहुंच गई है। आरबीआई की सालाना रिपोर्ट के अनुसार, 2022-23 में रिजर्व ने कुल 2.35 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं। यह राशि एक वित्तवर्ष पहले तक महज 1.60 लाख करोड़ रुपये थी। यानी बीते साल आरबीआई की सालाना कमाई 47 फीसदी बढ़ी है। इस दौरान सिर्फ विदेशी मुद्रा के ट्रांजेक्शन से होने वाली कमाई ही 50 फीसदी बढ़ी है। आरबीआई ने बताया है कि उसे विदेशी मुद्रा के एक्सचेंज से 1.03 लाख करोड़ रुपये की कमाई है। रिजर्व बैंक की कमाई बढ़ने से मोदी सरकार को भी बंपर मुनाफा हुआ है। इस बार आरबीआई ने लाभांश के रूप में केंद्र सरकार को 87,416 करोड़ रुपये दिए हैं, जो बजट में लगाए गए अनुमान से भी कहीं ज्यादा है। इसके पहले केंद्र को आरबीआई से मिले लाभांश की राशि करीब 40 हजार करोड़ रुपये थी। इस बार आरबीआई का लाभांश मिला है, तब राजकोषीय घाटे को भी काबू करने में मदद मिलेगी। रिजर्व बैंक ने बीते वित्तवर्ष रिकॉर्ड मात्रा में विदेशी मुद्रा का एक्सचेंज किया है। आंकड़ों के अनुसार 2022-23 में करीब 213 अरब डॉलर (17.25 लाख करोड़ रुपये) की विदेशी मुद्रा का एक्सचेंज किया है। यह 2021-22 में एक्सचेंज की गई राशि का करीब दोगुना है। विदेशी मुद्रा का विनिमय रिजर्व बैंक की कमाई का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। दरअसल रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध छिड़ने के बाद ग्लोबल मार्केट में महंगाई और सप्लाई बुरी तरह बाधित हुई। इसका असर रुपये पर भी पड़ा और उसका मूल्य गिरने लगा। इसमें जारी गिरावट को थामने के लिए रिजर्व बैंक को लगातार डॉलर की बिक्री करनी पड़ी। ऐसा करने से रुपये में जारी गिरावट थम गई, जो एक समय डॉलर के मुकाबले 83 के स्तर तक गिर गया था।

वायरस नियंत्रण के बाद धीमी हुई चीन में कारखाना गतिविधियां

नई दिल्ली ।

वायरस नियंत्रण क बाद से चीन में कारखाना गतिविधियों में भारी गिरावट बताई जा रही है। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि वायरस नियंत्रण उपायों के समाप्त होने के बाद मई में चीन का आर्थिक पुनरुद्धार सुस्त पड़ा है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय और एक उद्योग समूह द्वारा जारी मासिक खरीद प्रबंधक सूचकांक अप्रैल के 49.2 से गिरकर मई में 48.4 पर आ गया। इस सूचकांक के 50 से नीचे होने का मतलब सुस्ती से है। अमेरिका, यूरोप और एशिया के केंद्रीय बैंकों द्वारा मुद्रास्फीति पर नियंत्रण के लिए ब्याज दरों में बढ़ोतरी के चलते वैश्विक मांग कमजोर पड़ने से चीनी विनिर्माताओं को चोट पहुंची है। घरेलू मोर्चे पर वायरस-रोधी अंकुश हटने के बाद चीन में यात्रा और कारोबारी गतिविधियां बढ़ी हैं। लेकिन इनमें सुधार की रफ्तार उम्मीद से कम है। चीन की आर्थिक वृद्धि दर मार्च में समाप्त तिमाही में 4.5 प्रतिशत रही है। इससे पिछली तिमाही में यह 2.9 प्रतिशत रही थी। हालां कि सरकार के सालाना पांच प्रतिशत के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आगामी तिमाहियों में इसमें बढ़ोतरी जरूरी है।

कच्चे तेल के दामों में गिरावट के बावजूद पेट्रोल- डीजल में कोई बदलाव नहीं

नयी दिल्ली ।

भले ही कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट आई है, लेकिन पेट्रोल व डीजल के दामों में कोई कमी नहीं हुई है। इन दिनों क्रूड ऑयल की कीमतों में उतार-चढ़ाव जारी है। जानकारी के अनुसार अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दामों में भारी गिरावट आई है। इस दौरान डब्लूटीआई क्रूड ऑयल 4.4 फीसदी गिरकर 69.46 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया है। वहीं ब्रेंट क्रूड ऑयल के दाम 4.58 फीसदी की गिरावट के साथ 73.54 डॉलर प्रति बैरल पर आ गए हैं। इस बीच तेल कंपनियों ने भी पेट्रोल-डीजल के नए रेट जारी कर दिए हैं। हालांकि आज यानी बुधवार को भी पेट्रोल-डीजल के रेट में कोई बदलाव नहीं हुआ है। तेल कंपनियों ने 31 मई 2023 को भी पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर रखी हैं। इस तरह आज लगातार 375वां दिन है जब देश में पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। जानकारी के अनुसार बुधवार को देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बुधवार को पेट्रोल 96.72 रुपए और डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर पर बिक रहा है। मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए प्रति लीटर और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर पर मिल रहा है। इसके अलावा चेन्नई में पेट्रोल का भाव 102.63

रुपए प्रति लीटर पर और डीजल का भाव 94.24 रुपए प्रति लीटर है। वहीं, कोलकाता में मंगलवार को पेट्रोल 106.03 रुपए प्रति लीटर और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर पर बिक रहा है। नोएडा में पेट्रोल 96.57 रुपए और डीजल 89.96 रुपए प्रति लीटर पर बिक रहा है। गुरुग्राम में पेट्रोल 97.18 रुपए प्रति लीटर और डीजल 90.05 रुपए प्रति लीटर पर मिल रहा है। इसके अलावा चंडीगढ़ में पेट्रोल 96.20 रुपए और डीजल 84.26 रुपए प्रति लीटर पर मिल रहा है। वहीं, लखनऊ में पेट्रोल का भाव 96.57 रुपए और डीजल की कीमत 89.76 रुपए प्रति लीटर है।

जून में 12 दिन बैंकों पर ताला, 2000 का नोट बदलवाने जाने से पहले देख लें लिस्ट

नई दिल्ली ।

जहां एक ओर लोगों को 2000 रुपये के नोट बदलने की चिंता हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 के लिए बैंक छुट्टियों की लिस्ट जारी कर दी है। इसके बाद ये बेहद जरूरी है कि आपको पता हो कि इस बार जून में बैंक कितने दिन बंद रहने वाले हैं। जून में कुल 12 दिन बैंक बंद रहने वाले हैं। अगर आप जून के महीने में बैंक जाने की सोच रहे हैं, तब इस लिस्ट पर जरूर ध्यान दें। बता दें कि बैंकों की छुट्टी हर राज्य के हिसाब से अलग-अलग होती है। बैंक हॉलिडे लिस्ट के अनुसार क्षेत्रीय त्यौहार के मामले में सिर्फ संबंधित राज्य में ही उस दिन बैंकिंग कामकाज ठप रहेगा। आरबीआई के मुताबिक हर बैंक में साप्ताहिक छुट्टी यानी रविवार और दूसरा और चौथे शानिवार की छुट्टी रहती है। 4 जून 2023 को रविवार की साप्ताहिक छुट्टी रहेगी, 10 जून 2023 को दूसरे शानिवार की छुट्टी, 11 जून 2023 को रविवार की साप्ताहिक छुट्टी रहेगी, वहीं 15 जून 2023 को राजा संक्रांति के दिन (इस दिन ओडिशा और मिजोरम में बैंक बंद रहने वाले), 18 जून 2023 को रविवार की साप्ताहिक छुट्टी रहेगी, वहीं 20 जून 2023 को रथ यात्रा की छुट्टी (इस दिन ओडिशा और मणिपुर में बैंक बंद रहने वाले), 24 जून 2023 को महीने की चौथा शानिवार, 25 जून 2023 को रविवार की साप्ताहिक छुट्टी रहेगी। 26 जून 2023 को सोमवार, खर्ची पूजा की छुट्टी (इस दिन त्रिपुरा में बैंक बंद रहने वाले हैं। 28 जून 2023 को बुधवार, ईद-उल-अजहा की छुट्टी (इस दिन जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र और केरल में बैंक बंद रहने वाले) 29 जून 2023 को वीरवार, ईद-उल-अजहा की छुट्टी (इस दिन देशभर में बैंक बंद रहने वाले) 30 जून 2023 को शुक्रवार, रीमा-ईद-उल-अजहा की छुट्टी (इस दिन मिजोरम और ओडिशा में बैंक बंद रहने वाले) हैं।

दोहरे संकट के दौर में चल रहा दार्जिलिंग का चाय उद्योग

कोलकाता ।

दार्जिलिंग का चाय उद्योग इन दिनों दोहरे संकट के दौर से गुजर रहा है। देश के प्रमुख चाय क्षेत्र दार्जिलिंग के चाय उत्पादक (प्लांटर्स) चाय की उत्पादकता घटने और निर्यात गंतव्यों से कम कीमत मिलने के दोहरे झटकों से परेशान हैं। इस मामले में उद्योग निकायों ने मंगलवार को कहा कि पश्चिमी यूरोप और जापान जैसे पारंपरिक बाजारों में मंदी वाली आर्थिक स्थिति के कारण उन्हें मिलने वाले कीमतों में कमी आई है। उन्होंने कहा कि 87 दार्जिलिंग चाय बागानों के उत्पादन का आकार, जो प्रतिवर्ष 80 लाख किलोग्राम से अधिक हुआ करता था, जलवायु परिवर्तन और कीटों के हमलों के कारण 65-70 लाख किलोग्राम रह गया है। भारतीय चाय निर्यातक संघ के अध्यक्ष अंशुमन कनोरिया ने कहा कि दार्जिलिंग चाय उद्योग इन दिनों 'आईसीयू में है। भले ही चाय के उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है, जबकि प्रतिकूल जलवायु के कारण फसल उत्पादन में गिरावट आ रही है। निर्यात भी निराशाजनक आर्थिक स्थिति के कारण घट रहा है।

पश्चिमी यूरोप और जापान से मिलने वाली कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। दार्जिलिंग में कई बागान बंद होने के कगार पर हैं, क्योंकि परिचालन जारी नहीं रखा जा सकता है। अध्यक्ष ने कहा कि संघ इस ज्वलंत मुद्दे पर चाय बोर्ड को संवेदनशील बनाने की कोशिश कर रहा है। दार्जिलिंग चाय उद्योग उन कारकों से प्रभावित हुआ है, जो उसके नियंत्रण में नहीं हैं। क्षेत्र के चाय बागान मालिकों को भुगतान की जाने वाली एकमुश्त सब्सिडी और प्रचार गतिविधियों के लिए वित्तपोषण जैसे सरकारी सहायता के बिना इस उद्योग को जीवित नहीं रखा जा सकता है।

2 हजार के नोट जमा होने के बाद एक लाख करोड़ रुपए नकदी आने की उम्मीद

नई दिल्ली ।

एसबीआई की रिपोर्ट 'इकोरैप' के अनुसार यदि बाजार में 2 हजार रुपये के 80 प्रतिशत नोट जमा हो गए तो बैंकिंग प्रणाली में नकदी बढ़कर एक लाख करोड़ रुपये से अधिक होने की उम्मीद है। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि यह अनुमान मौजूदा उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित है और आगे आने वाले आंकड़ों के आधार पर इनमें बदलाव हो सकता है। हालांकि, ब्याज दर का क्रम निर्णायक रूप से चरम पर पहुंच चुका है। इकोरैप में कहा गया है कि बाजार के रुझान के अनुसार प्राप्त कुल 2 हजार रुपये के नोटों में से लगभग 80 प्रतिशत जमा किए गए और शेष 20 प्रतिशत को छोटे मूल्य के नोटों से बदला गया तो एक लाख करोड़ जमा हो जाएंगे। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 19 मई को अपने मुद्रा प्रबंधन के हिस्से के रूप में 2 हजार रुपये के बैंक नोटों को वापस लेने की घोषणा की थी।

इसके तहत एक बार में व्यक्ति 20 हजार रुपये तक के 2 हजार नोट बदल सकता है। नोट को बदलने की सुविधा 23 मई से 30 सितंबर 2023 तक खुली रहेगी।

पाकिस्तान को एकदिवसीय विश्वकप के लिए भारत दौरे के लिए मना रहा आईसीसी

कराची (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के अध्यक्ष और सीईओ अभी पाकिस्तान दौरें पर हैं और वह पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को इस बात के लिए मना रहे हैं कि वह भारत में होने वाले एकदिवसीय विश्व कप में अपने मैचों के लिए हाइब्रिड मॉडल (तटस्थ स्थल पर मैचों का आयोजन) करने की मांग न करे। बार्कले और एलार्डिस अभी लाहौर में हैं और पीसीबी को इस बात के लिए सहमत करने में लगे हैं कि वह अक्टूबर-नवंबर में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप के लिए भारत का दौरा करे। इससे पहले पीसीबी के प्रमुख नजम सेठी ने कहा था कि अगर भारतीय टीम एशिया कप के लिए पाकिस्तान का दौरा नहीं करेगी तो फिर उनकी टीम भी विश्वकप के लिए भारत नहीं जाएगी। इसके बाद ही आईसीसी अधिकारी पीसीबी से बात करने में लगे हैं।

आईसीसी और भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को आशंका है कि नजम सेठी विश्वकप के लिए भी हाइब्रिड मॉडल को अपनाने पर जोर दे सकते हैं। सेठी ने हालांकि हाइब्रिड मॉडल का सुझाव विश्वकप से पहले होने वाले एशिया कप के लिए दिया है पर आईसीसी अधिकारी इस बात को लेकर चिंतित हैं कि अगर इस क्षेत्रीय प्रतियोगिता के लिए यह मॉडल स्वीकार कर लिया जाता है तो पीसीबी पाकिस्तान के भारत में खेलने के सवाल पर आईसीसी से विश्वकप में भी इस मॉडल को लागू करने की मांग कर सकता है। सेठी ने पहले ही कहा था यदि पाकिस्तान सरकार सुरक्षा कारणों से टीम को भारत भेजने की अनुमति नहीं देती है तो पीसीबी ऐसी स्थिति में आईसीसी से पाकिस्तान के मैच तटस्थ स्थान पर करवाने के लिए कहेगा।

सूत्रों ने कहा, ''स्वाभाविक है कि आईसीसी और बीसीसीआई इस तरह की स्थिति नहीं चाहते क्योंकि इससे भारत-पाकिस्तान मैच और यहां तक कि टूर्नामेंट की सफलता भी प्रभावित होगी। एक अन्य सूत्र ने कहा कि यही वजह है कि बीसीसीआई के सचिव जय शाह एशिया कप के लिए हाइब्रिड मॉडल को स्वीकार नहीं कर रहे हैं जिसके तहत तीन या चार मैचों का आयोजन पाकिस्तान में और बाकी मैचों का आयोजन संयुक्त अरब अमीरात या श्रीलंका में होगा। वहीं पीसीबी प्रमुख ने इससे पहले कहा था कि अगर भारतीय टीम एशिया कप के लिए पाक नहीं आती तो वे भी विश्वकप के लिए भारत नहीं जाएंगे।

भारत के किरण ने चीन के युकी को हराकर किया उलटफेर

-अश्मिता और साइना भी अगले दौर में पहुंचे

बैंकॉक (एजेंसी)। भारत के किरण जॉर्ज ने विश्व के नौवें नंबर के खिलाड़ी चीन के शी युकी को सीधे गेम में हराकर थाईलैंड ओपन सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल के प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया है। वहीं महिला युगल में भारत की ही अश्मिता चाहिला और साइना नेहवाल ने भी जीत के साथ ही अगले दौर में जगह बनाई हालांकि पुरुष एकल में भारत के शीर्ष खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत और बी साई प्रणीत पुरुष को हार का सामना करना पड़ा। भारत के किरण ने पुरुष एकल में युकी को 21-18 22-20 से हराकर एक बड़ा उलटफेर कर सबको हैरान कर दिया।

किरण अब अगले दौर में चीन के वेंग होंग येंग से खेलेंगे। वहीं अन्य मुकाबलों में क्वालीफायर अश्मिता ने अपने ही देश की मालविका बंसोड़ को 21-17 21-14 से हराया जबकि साइना ने कनाडा की वेन यू झेंग को 21-13 21-7 से पराजित किया। अश्मिता अब अगले दौर में कैरोलिना मारिन का सामना करेंगी। वहीं साइना का सामना चीन की ही बिंग जियाओ से हो सकता है। श्रीकांत को चीन के वेंग होंग येंग के खिलाफ 8-21 21-16 14-21 से हार का सामना करना पड़ा जबकि समीर वर्मा को डेनमार्क के मैग्नस योहानसेन ने 15-21 15-21 से हराया। प्रणीत को फ्रांस के क्रिस्टो पोपोव ने 14-21 16-21 से हराया।

आईपीएल में एक बार भी अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाये गेल, डिविलियर्स और विराट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल में तीन ऐसे खिलाड़ी भी हैं जिन्होंने रनों में तो रिकार्ड बना दिया पर उनकी टीम कभी भी खिताब नहीं जीत पायी है। इन खिलाड़ियों में विराट कोहली, ए बी डिविलियर्स और क्रिस गेल जैसे स्टार बल्लेबाज हैं। गेल के नाम टी20 में सबसे बड़े स्कोर 175 रनों का भी रिकार्ड है। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के पूर्व कप्तान विराट ने आईपीएल 2016 में सबसे ज्यादा 973 रन बनाये थे। लीग के एक सत्र में किसी खिलाड़ी के बल्ले से निकले सबसे ज्यादा रनों का यह रिकॉर्ड आज भी बना हुआ है। इसके करीब भी अन्य बल्लेबाज नहीं पहुंच पाये हैं।

इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका के स्टार बल्लेबाज डिविलियर्स भी अपनी धमाके दार बल्लेबाजी के लिए जाने जाते हैं। इसके बाद भी वह कभी भी अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाये।इन दोनों के अलावा क्रिस गेल भी अपनी बल पर बड़ा स्कोर बनाते आये हैं पर वह भी अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाये हैं।

आईपीएल में गेल ने फ्रेंचाइजी बदल-बदलकर कर देखा पर वह अपनी टीम को एक बार भी जीत नहीं दिला पाये। लीग में जमकर रन बनाने वाले गेल के नाम कई रिकॉर्ड दर्ज हैं, जिनके करीब कोई अन्य बल्लेबाज नहीं पहुंच पाया है।

ट्रॉफी के साथ सीएसके प्रबंधन ने की तिरुपति बालाजी मंदिर में पूजा

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई सुपरकिंग्स टीम (सीएसके) टीम प्रबंधन ने पांचवीं बार आईपीएल खिताब जीतने पर तिरुपति बालाजी मंदिर में विशेष पूजा करायी है। इस दौरान टीम प्रबंधन के सदस्य ट्रॉफी के साथ मंदिर पहुंचे। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के पुजारियों ने भी तमिल रीति-रिवाज के साथ ट्रॉफी की पूजा की। हालांकि इस दौरान खिलाड़ी वहां नहीं थे। सीएसके प्रबंधन पहले भी आईपीएल जीतने के बाद ट्रॉफी को मंदिर ले जाया करता था। यह सीएसके टीम मैनेजमेंट की परम्परा का ही एक हिस्सा है। फ्रैंचाइजी के मालिक एन. श्रीनिवासन ने भी टीम की जीत के तत्काल बाद मंदिर पहुंचकर भागवान बालाजी के दर्शन कर आभार प्रकट किया था।

वहीं फाइनल में मिली जीत को सीएसके फ्रैंचाइजी के मालिक एन. श्रीनिवासन ने 'चमत्कार' बताया था। उन्होंने कहा था कि दिग्गज महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में ही ऐसा कुछ हो सकता है। श्रीनिवासन ने फाइनल की अगली सुबह सुपरकिंग्स के कप्तान धोनी से बात की और इस शानदार जीत के लिए उन्हें और उनकी टीम को बधाई भी दी।

श्रीनिवासन ने धोनी से कहा, 'शानदार कप्तान। आपने करिश्मा कर दिया। आप ही ऐसा कर सकते हैं। हमें खिलाड़ियों और टीम पर गर्व है।' उन्होंने पिछले कुछ दिनों में लगातार मुकाबलों के बाद धोनी को आराम करने की सलाह दी और जीत का जश्न मनाने के लिए उन्हें टीम के साथ चेन्नई आने के लिए आमंत्रित किया।

डब्ल्यूटीसी फाइनल मुकाबले के लिए अभ्यास में लगे रोहित

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने सात जून से होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल मुकाबले के लिए अभ्यास शुरु कर दिया है। इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से होगा। इसके लिए दोनो ही टीमें तैयारियों में लगी हैं। इसी कड़ी में आईसीसी ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जारी किया है। इस वीडियो में रोहित मैदान में जमकर अभ्यास करते दिख रहे हैं। डब्ल्यूटीसी के मुकाबलों में अब तक रोहित खासे सफल रहे हैं। वह इसमें सबसे अधिक रन बनाने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं जबकि विराट कोहली रन बनाने के नाम पर पहले नंबर पर हैं। रोहित ने इस टूर्नामेंट में 2019 से अबतक कुल 22 मुकाबले खेलते हुए 36 पारियों में 52.76 की औसत से 1794 रन बनाये हैं। डब्ल्यूटीसी में उनके नाम छह शतक और चार अर्द्धशतक भी शामिल हैं। उनका सबसे बेहतर रिकार्ड 212 रन रहा है। रोहित ने अबतक कुल 49 टेस्ट की 83 पारियों में 45.66 की औसत से 3379 रन बनाये हैं। उन्होंने नाम टेस्ट क्रिकेट में एक दोहरा शतक, नौ शतक और 14 अर्द्धशतक लगाये हैं।

हार के बाद रात भर नहीं सो पाये थे गुजरात के गेंदबाज मोहित

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस के तेज गेंदबाज मोहित शर्मा आईपीएल फाइनल में मिली हार से बेहद दुखी हैं। मोहित ने कहा कि वह फाइनल में मिली हार के बाद रात भर सो भी नहीं पाये थे। मोहित ने चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) की ओर से अंतिम ओवर किया था और वह 13 रनों को नहीं बचा पये थे जिससे सीएसके ने ये मैच जीत लिया था। 34 साल के मोहित ने इसी साल वापसी करते हुए गुजरात की ओर से शानदार प्रदर्शन किया था। वह पिछले आठ से साल से भारतीय टीम से बाहर चल रहे थे। ऐसे में उनका मनोबल बढ़ा हुआ था। एक ही ओवर में दो विकेट लेकर उन्होंने गुजरात की मैच में वापसी भी करायी थी। थे। 20वें ओवर की शुरुआती चार गेंदों में उन्होंने केवल तीन रन ही दिए। मगर पांचवीं में छक्का और छठी में चौका मारकर सीएसके के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने उनके इरादों पर पानी फेर दिया। तब कप्तान हार्दिक पंड्या ने मोहित को गले लगाकर उनका हौंसला बढ़ाया। मोहित के अनुसार हार के बाद वह बेहद परेशान थे। अंतिम ओवर में मुझे क्या करना है ये साफ था। नेट्स में मैंने ऐसे हालातों में जमकर अभ्यास किया था। इससे पहले भी मैं ऐसे हालातों से गुजर चुका था इसलिए मैंने यॉर्कर को ही अपना हथियार बनाया। चार गेंद के बाद हार्दिक मुझसे बात करने आये। वह मेरी योजना जानना चाहते थे तब मैंने कहा कि मैं यॉर्कर ही फेकूंगा। मगर गेंद वहां गिरी, जहां उसे नहीं गिरना था। इससे जडेजा उसपर शॉट खेलने में सफल हो गये। वहीं अंतिम दो गेंदों में एक छक्का और फिर चौका मारकर हीरो बने रविंद्र जडेजा ने मैच के बाद कहा, मेरे दिमाग में बस यही चल रहा था कि मुझे बल्ला जोर से घुमाना है। गेंद कहां जाएंगी, मैं इसके बारे में नहीं सोच रहा था। मैंने अपने को बैक किया। मैं गेंद को सीधा मारना चाहता था क्योंकि जानता था कि मोहित स्लोअर भी बढ़िया डाल सकता है।

डब्ल्यूटीसी फाइनल में रहेंगे बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी जैसे हालात: स्मिथ

मुम्बई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर स्टीव स्मिथ को आशंका है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के दौरान ओवल मैदान के हालात बल्लेबाजों के अनुकूल हो सकते हैं। ऐसे में भारतीय टीम को लाभ हो सकता है। स्मिथ के अनुसार ओवल में मैच आगे बढ़ने पर उन्हें उसी तरह के हालातों का सामना करना पड़ेगा, जैसा भारत में खेली गई पिछली बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में करने को मिला था। स्मिथ का संकेत ओवल में स्पिन गेंदबाजों को विकेट से सहायता मिलने की ओर है।

स्मिथ का मानना है कि इंग्लैंड में ओवल का मैदान बल्लेबाजी के लिए सबसे बेहतर है। उन्होंने कहा, ओवल में बल्लेबाजी के अनुसार उछाल और रफ्तार अच्छी होती है। यहां आउटफील्ड भी तेज है। एक बार जम जाएं तो फिर बल्लेबाजी करना और आसान हो जाता है। स्मिथ ने आगे कहा कि जैसे-जैसे टेस्ट मैच आगे बढ़ेगा ओवल में स्पिन गेंदबाजों को पिच से भी सहायता मिलेगी। इसलिए मुझे लगता है कि ऑस्ट्रेलिया को ओवल में वैसे ही हालातों का सामना करना पड़ेगा, जैसा भारत में खेली गई पिछली बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में करना पड़ा था।

गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया ने इस साल फरवरी-मार्च में 4 टेस्ट की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए भारत का दौरा किया था। भारत ने वो सीरीज 2-1 से जीती थी। सीरीज के पहले दो टेस्ट भारत ने जीते थे। इसके बाद तीसरे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया ने जीत हासिल की थी।

अंडर-20 विश्वकप क्वार्टर फाइनल में पहुंची अमेरिका

ब्यूनस आयर्स। अमेरिका की टीम न्यूजीलैंड को 4-0 से हराकर अंडर-20 विश्व कप फुटबॉल के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गयी है। अमेरिका ने अंतिम 16 के इस मैच में शुरू से लेकर अंत तक अपना प्रभाव बनाये रखा। अमेरिका की ओर से ओवन वोल्फ ने एक गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलायी। दूसरा गोल 61वें मिनट के बाद कैडे कोवेल ने किया। इसके बाद जस्टिन ये और रोकास पुकस्टास ने दो और गोल किये। अमेरिका टूर्नामेंट में एकमात्र ऐसी टीम है जिसके खिलाफ अभी तक एक भी गोल नहीं हुआ है। अब क्वार्टर फाइनल में उसका मुकाबला गाबिया और उरुग्वे के बीच होने वाले मैच की विजेता टीम से होगा

जून में इंटरकॉन्टिनेंटल और सैफ चैंपियनशिप खेलेगी भारतीय फुटबॉल टीम

नई दिल्ली। एशियाई कप को देखते हुए भारतीय टीम भुवनेश्वर में नौ से 18 जून तक हीरो इंटरकॉन्टिनेंटल कप और बेंगलुरु में सैफ चैंपियनशिप में 21 जून से चार जुलाई तक खेलेगी। वहीं इस साल के अंत में भारतीय टीम थाईलैंड में किंग्स कप और मलेशिया में मर्डेका कप में भी शामिल होगी। वहीं (एआईएफएफ) के अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने की योजना को मिडफील्डर लालेंगमाविया राल्टे ने सही करार दिया और कहा है कि इससे टीम को लाभ होगा पर खिलाड़ियों के चोटिल होने की आशंकाएं भी बढ़ जाएंगी। राल्टे ने कहा, ''यह पहली बार है जब भारतीय टीम एक साल में इतने सारे मैच खेलेगी। इससे हमारे खिलाड़ियों को मैदान पर बेहतर तालमेल बिठाने में सहायता मिलेगी क्योंकि हम आमतौर पर अपने राष्ट्रीय टीम के साथ कम ही मैच खेलते हैं।'' इस युवा खिलाड़ी ने कहा, '' फुटबॉल एक टीम खेल है, इसलिए साथ रहना अहम है। इसमें ये जानने की जरूरत है कि कौन सा खिलाड़ी किस तरह से अवसर बनाना पसंद करता है और कहां गेंद चाहता है। ऐसे में हम उसके साथ जितना अधिक खेलेंगे। हमारा समन्वय बेहतर होता जाएगा।''

ऋषभ की नहीं होगी दूसरी सर्जरी, विश्वकप खेलने की संभावनाएं बनीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के आक्रमक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को लेकर एक अच्छी खबर आई। कार हादसे में घायल हुए ऋषभ तेजी से ठीक हो रहे हैं और माना जा रहा है कि उनकी दूसरी सर्जरी की जरुरत नहीं पड़ेगी। ऐसे में ऋषभ के विश्वकप खेलने की संभावनाएं भी बन रही हैं। इससे पहले कहा जा रहा था कि उनके दाएं घुटने की एक और सर्जरी होगी पर अब डॉक्टरों और मेडिकल टीम का मानना है कि वह तेजी से ठीक हो रहे हैं और उनकी दूसरी सर्जरी की जरुरत नहीं है। ऋषभ बैंगलोर स्थित नेशनल क्रिकेट एकेडमी पहुंच गए हैं, जहां उनका रिहैब होगा।

वहीं बीसीसीआई ने कहा, एक और सर्जरी को लेकर तनाव था हर 15 दिन में उनकी रिकवरी पर नजर रखी गयी थी। अच्छी बात यह है कि, उनकी रिपोर्ट उम्मीद से ज्यादा बेहतर है। यह उनके लिए उत्साह की बात है। इससे साफ है कि वह तय समय से पहले मैदान पर वापसी करेंगे। पहले कहा जा रहा था रहा था कि वह इस साल विश्व कप के बाद खेलेंगे पर अब वह विश्व कप से पहले ही फिट हो सकते हैं।

वह अब बिना बैसाखी के सहारे भी चल रह हैं। अब उनका सुधार मुख्य रूप से उनके जोश और उत्साह पर निर्भर करेगा। इसके बाद वह शीघ्र ही ट्रेनिंग भी शुरू कर सकते हैं। इसी महीने ऋषभ ने अपना एक वीडियो भी ट्वीट किया था जिसमें लिखा था, हैप्पी नो मोर ऋचेज डे। गौरतलब है कि ऋषभ पिछले साल 30 दिसंबर को एक कार हादसे में गंभीर रुप से घायल हो गये थे।

डब्ल्यूटीसी के लिए भारतीय क्रिकेटरों को अब टी20 प्रारुप से बाहर निकलना होगा

-टेस्ट प्रारुप के लिए मानसिक रुप से तैयार होना होगा

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल के समाप्त होने के बाद अब क्रिकेट प्रशंसकों की नजरें इसी साल 7 जून से इंग्लैंड में होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनपशिप (डब्ल्यूटीसी) मुकाबले पर टिक गयी हैं। इसमें टीम इंडिया का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से होगा। ऐसे में अब भारतीय खिलाड़ियों को टी20 प्रारुप से निकलकर टेस्ट में खेलने अपने को मानसिक रुप से तैयार करना होगा। इसके लिए भारतीय टीम के कई खिलाड़ियों ने इंग्लैंड पहुंचकर तैयारी भी शुरू कर दी है। कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली इंग्लैंड पहुंच गये हैं।

वहीं शुभमन गिल, रवींद्र जडेजा,शमी जैसे अन्य खिलाड़ी भी अब शीघ्र ही लंदन रवाना होंगे। ऑस्ट्रेलियाई टीम पहले से ही टेस्ट प्रारुप के हिसाब से तैयारियों में लगी है। भारतीय टीम ने हाल में ऑस्ट्रेलिया को टेस्ट मैचों में हराया था पर डब्ल्यूटीसी में उसे कम नहीं माना जा सकता। इसका कारण ये है कि डब्ल्यूटीसी फाइनल इंग्लैंड में आयोजित हो रहा है और वहां के हालत ऑस्ट्रेलियाई टीम के अधिक अनुकूल हैं। मिचेल स्टॉर्क की कप्तानी में ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज स्विंग लेती स्थिति में भारतीय बल्लेबाजों के लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। टीम इंडिया के कई बल्लेबाजों का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अच्छा रिकॉर्ड है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे अच्छा बल्लेबाजी औसत अक्षर पटेल का है। उन्होंने 4 टेस्ट में 88.00 के औसत से 264 रन बनाये हैं जिसमें तीन अर्धशतक भी शामिल हैं पर अक्षर को भारतीय टीम की अंतिम ग्यारह में जगह मिलना कठिन है। इसका कारण यह है कि इंग्लैंड में टीम इंडिया तीन तेज गेंदबाजों और दो स्पिनरों के संयोजन के साथ मैदान में उतर सकती है। ऐसे में आईपीएल में शानदार प्रदर्शन करने वाले रविन्द्र जडेजा को अक्षर पर वरीयता मिलना तय है।

डब्ल्यूटीसी के लिए अश्विन, रविंद्र जडेजा और ईशान को शामिल करे भारतीय टीम - पोंटिंग

सिडनी। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा है कि अगले माह जून से इंग्लैंड में होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल में भारतीय टीम को अनुभवी स्पिनर आर अश्विन और रविंद्र जडेजा को शामिल करना चाहिये। वहीं विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर केएस भरत की जगह इशान किशन को रखना चाहिये। पोंटिंग का मानना है कि भारत को अगर ऑस्ट्रेलिया के ऊपर दबाव बनाना है, तो उन्हें अपनी टीम में जितना संभव हो, उतने मैच का रुख बदलने वाले खिलाड़ी (एक्स-फैक्टर) खिलाड़ी को जगह देनी होगी। पोंटिंग के अनुसार जडेजा को नंबर-6 पर बल्लेबाजी के लिए आना चाहिए और उनसे ऊपर सूर्यकुमार यादव को मध्यक्रम की जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

वेस्टइंडीज और अमेरिका में टी20 सीरीज के लिए मोहित को मिल सकती है जगह

नई दिल्ली। आईपीएल के 16 वें सत्र में शानदार प्रदर्शन करने वाले मोहित शर्मा को अब टीम इंडिया में जगह की उम्मीद है। अब देखना है कि उन्हें 2024 टी20 विश्व कप के लिए टीम में जगह मिलती है या नहीं। मोहित ने अब जुलाई में वेस्टइंडीज और अमेरिका में भारत की पांच मैचों की टी20 श्रृंखला के लिए भी अपनी दावेदारी पेश की है। हार्दिक पंडया भी मोहित से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने में सफल रहे और वह भी इस तेज गेंदबाज को राष्ट्रीय स्तर पर भी एक मौका देना चाहेंगे। मोहित सीएसके में महेंद्र सिंह धोनी के नेतृत्व में खेलने के बाद 10 साल पहले भारतीय टीम में पहुंचे थे। मोहित ने पिछले महीने टाइटन्स के लिए अपना पदार्पण करने के तुरंत बाद कहा था, ''मैंने आईपीएल और भारतीय टीम के साथ करियर का सबसे ज्यादा हिस्सा माही भाई की अगुआई में खेला है। उनके नेतृत्व में ही मैंने अच्छे परिणाम हासिल किये हैं, इसलिये मेरा सर्वश्रेष्ठ निकालने का बड़ा श्रेय उन्हें ही जाता है। उन्होंने कहा था, ''लेकिन मेरे लिये अब यह ज्यादा मायने रखता है कि आप खेल का कितना आनंद उठाते हो। सीएसके के लिए 2013-2016 तक खेलना मेरे करियर का स्वर्णिम समय रहा लेकिन अगर माहौल की बात की जाये तो आईपीएल में यहां (टाइटन्स के साथ) यह सर्वश्रेष्ठ रहा है।

गुजरात शिक्षा बोर्ड ने 31 मई को जारी किए कक्षा 12 सामान्य संकाय के नतीजे

द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल गुजरात बोर्ड के छात्रों के कक्षा 12 वाणिज्य के परिणामों में अभूतपूर्व सफलता

जहांगीराबाद, सूरत स्थित एक स्कूल, द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों द्वारा दिनांकित बुधवार 31/05/2023 को गुजरात बोर्ड द्वारा घोषित 12वीं कक्षा के वाणिज्य परिणाम में 1 छात्र ने ए1 ग्रेड प्राप्त किया और 8 छात्रों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन के साथ ए2 ग्रेड प्राप्त कर पूरे सूरत और गुजरात में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

अवया नील राकेशभाई जिन्होंने कक्षा 10 में ए2 ग्रेड प्राप्त किया है, ने मार्च 2023 वाणिज्य में स्कूल शिक्षकों की टीम के निरंतर प्रयासों और मार्च 2023 वाणिज्य में ए2 ग्रेड प्राप्त करने वाले कक्षा 10वीं में ए2 ग्रेड या उससे कम के माध्यम से ए1 ग्रेड और 99.97 पीआर के साथ स्कूल में पहली रैंक हासिल की है। ग्रेड मिले

डोबरिया दीप अशोकभाई - 95.57 PR
काकड़िया ध्रुविल पंकजभाई - 95.67 PR
कलशा आर्ची अरविंदभाई - 98.41 PR
तमकुवाला महक अल्पेशभाई-96.15 PR
भिंगराड़िया हर्ष नरेशभाई - 96.42 PR
गोलकिया केनील नरेशभाई - 95.37 PR
पिपलिया प्रिंस बिपिनभाई - 96.84 PR
रणोदरिया ध्रुवी रिनेशभाई - 98.41 PR

रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल गुजरात बोर्ड ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि इस स्कूल ने राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार जीते हैं और स्कूल बोर्ड भी परिणाम देने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल है, जिसे पूरे सूरत में 12वीं कक्षा के वाणिज्य परिणाम में भी इस परिणाम में नामांकित किया गया है। साथ ही, स्कूल ने 12वीं कक्षा में लगातार 4 वर्षों तक 99% से अधिक परिणाम प्राप्त करके छात्रों के उच्च लक्ष्यों को पूरा करने और माता-पिता के पोषित सपनों को पूरा करने के लिए अथक प्रयास किया है।

इसके साथ ही 32 छात्रों ने 90 से अधिक पीआर हासिल किए हैं। स्कूल से 85% पीआर से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 27 छात्र उत्तीर्ण हुए हैं। स्कूल के प्रबंध न्यासी किशनभाई मांगूकिया, निदेशक श्री आशीषभाई वाघानी और स्कूल के प्रधानाचार्य श्री डॉ. विरल नानावटी ने छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई दी और छात्रों को जीवन में कई अन्य उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सेंट मार्क हायर सेकेंडरी स्कूल के एच.एस.सी. बोर्ड का रिजल्ट घोषित

सूरत।

एच.एस.सी. बोर्ड का रिजल्ट घोषित हों गया हैं। जिसमें सेंट मार्क हायर सेकेंडरी स्कूल अडाजन सूरत में प्रथम रैंक मालेक मो. कलीम अल्ताफ हुसैन (99.85 परसेंटाइल रैंक), दूसरी रैंक जैन खुशु नोरतमल (99.44-पर्सेंटाइल रैंक), और मूलचंदा के पहले नीलेशभाई (99.35 - परसेंटाइल रैंक) ने स्कूल का नाम रोशन किया है।

ए1 और ए2 में संयुक्त रूप से आठ छात्रों और बी1 और बी2 में चालीस छात्रों ने शानदार परिणाम हासिल किए हैं। विद्यालय परिवार की ओर से बधाई। विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम, अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावक मित्रों के सहयोग से विद्यार्थियों ने यह सिद्ध कर दिया कि "लक्ष्य प्राप्ति के लिए इच्छा शक्ति प्रबल होनी चाहिए"। चंदवानी कशिश ने लेखा विषय में 100 में से 100 अंक तथा मालेक मो. कलीम ने सांख्यिकी में 100 में से 100 अंक प्राप्त किए जिन्हें विद्यालय परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई। स्कूल ट्रस्टी श्री बी.वी.एस. राव सर, सुशीला मैडम, प्रिंसिपल धन्या मैडम, प्रशासक श्री डेविडसर और स्कूल के शिक्षकों ने छात्रों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इन छात्रों ने साबित कर दिया कि "कड़ी मेहनत और लगन से मंजिल हासिल की जा सकती है"। ए1 और ए2 प्राप्त करने वाले छात्रों को शील्ड देकर सम्मानित किया गया और उनके अभिभावकों को बुके देकर सम्मानित किया गया।

एल.पी.सवानी ग्रुप ऑफ स्कूल्स के छात्रों ने 12वीं कक्षा के वाणिज्य के शानदार परिणाम दिखे

साबित कर दिया कि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है।

सूरत।

एल.पी.सावनी ग्रुप ऑफ स्कूल्स में कक्षा 12 कॉमर्स में पढ़ने वाले छात्रों ने शानदार परिणाम प्राप्त कर पूरे सूरत शहर में अपना जलवा बिखेरा है और शिक्षा की दुनिया में अपना मुकाम बनाया है। इस कहावत पर खरे उतरते हुए कि पंखो से कु नहीं होता हंस्लो से उड़न होती हैज, 12वीं कक्षा के वाणिज्य छात्रों और शिक्षकों की टीम ने ग्रेड के साथ स्टेट सब्जेक्ट में 100 अंक हासिल किए।

छात्रों के उच्च परिणामों के साथ स्कूलों के समूह को गौरवान्वित किया है।

ए1 ग्रेड में 9 विद्यार्थियों, ए2 ग्रेड में 70 विद्यार्थियों, बी1 ग्रेड में 104 विद्यार्थियों, बी2 ग्रेड में 99 विद्यार्थियों ने बहुत ही गौरवपूर्ण परिणाम प्राप्त कर सूरत शहर के एल.पी.सवानी ग्रुप ऑफ स्कूल्स स्कूलों का नाम रौशन किया है। सीएच मारफतिया नैटिके और दोषी संयम ने ए1 ग्रेड के साथ उत्तीर्ण हुए हैं।

छात्रों द्वारा की गई मेहनत, अनुभवी शिक्षकों की कड़ी मेहनत और मार्गदर्शन और माता-पिता के सराहनीय सहयोग से छात्रों ने इस बात को कायम रखा है कि च्द्दृढ़ता की कल्पना की जा सकती हैज्ज स्कूल के अध्यक्ष श्री मावजीभाई सवानी और उपाध्यक्ष श्री धर्मेंद्र विद्यालय के प्रधानाचार्य सवानी जी के साथ-साथ प्रत्येक शिक्षक मित्र एवं समस्त विद्यालय परिवार को विद्यार्थियों की सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री स्वामीनारायण एचवी विद्यालय की उपलब्धि

सूरत।

अडाजन स्थित श्री स्वामीनारायण एचवी विद्यालय शिक्षा और संस्कारों का त्रिवेणी संगम है। विगत 1 वर्ष से उस विद्यालय के ट्रस्टी प्राचार्य एवं कर्मचारी मित्र शिक्षा के माध्यम से समाज व राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित रहे हैं। प्रत्येक वर्ष शिक्षकों द्वारा नवीन प्रयोग विधियों द्वारा बच्चों को शिक्षा को रुचिकर एवं रुचिकर बनाने के लिए नवीन प्रयास किए जाते हैं। स्कूल वर्ष 2022-23 में 12वीं कक्षा में छह परिणाम देने में सफल रहा है। कोविड जैसी कठिन परिस्थिति में भी आचार्य , छात्रों और अभिभावकों के संयुक्त प्रयास और सहयोग के परिणामस्वरूप अच्छे से अच्छे परिणाम सामने आए हैं।

आचार्य श्री केतनकुमार व्यास, पर्यवेक्षक श्रीमती वर्षाबेन और साथी शिक्षकों की मेहनत और प्रोत्साहन से इस वर्ष भी 12वीं कक्षा का सर्वश्रेष्ठ परिणाम 12 छात्र बी1 ग्रेड के साथ उत्तीर्ण हुए हैं।

12वीं कक्षा के कुल 33 छात्रों में से 2- ए2 ग्रेड वाले छात्र एवं विद्यालय के संस्थापक शास्त्री स्वामी श्री हरिवल्लभदासजी ने छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई दी। प्रशासक दिनेशभाई गोंडलिया और हिम्मत भाई गोंडलिया, सभी छात्र, कर्मचारी मित्र और अभिभावक अपने उचित समन्वय से ही अच्छे परिणाम प्राप्त कर पाए। जिसके लिए सभी को बधाई दी गई है।

भारत की कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक डाबर वीटा ने बच्चों के स्वास्थ्य पर आयोजित किया विशेष सैशन

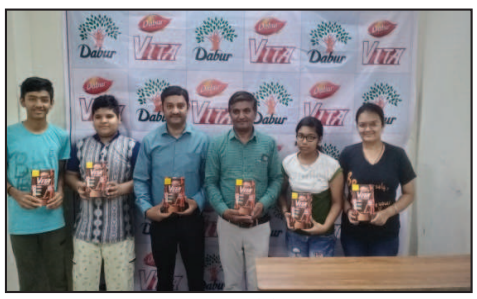

सूरत ।

हमारी आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के प्रयास में डाबर की ओर से कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक डाबर वीटा ने एक विशाल जागरुकता अभियान का आयोजन किया। जिसके माध्यम से बच्चों को उनकी सेहत से जुड़े सात पहलुओं जैसे अच्छा डाइजेशन, रेस्पीरेटरी हेल्थ, मजबूत हड्डियों एवं मांसपेशियों, ताकत, स्टैमिना, और बेहतर इम्युनिटी के बारे में जागरुक बनाया गया।

यह अभियान आज सूरत के भिमराड केनाल रोड, अलथान के ज्ञानज्योत ग्रुप ट्यूशन मे आयोजित हुआ, जिसमें 200 बच्चों ने हिस्सा लिया। बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्टेमिना और मजबूत इम्युनिटी के साथ-साथ बेसिक हाइजीन एवं सेहतमंद आहार के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें डाबर वीटा से युक्त स्पेशल हेल्थ किट भी दी गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री दिनेश कुमार- मैनेजर कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस, डाबर इंडिया लिमिटेड ने कहा, "आजकल बच्चे पढ़ाई से लेकर खेलों और एक्स्ट्रा-करीकुलर एक्टीविटीज में भी अच्छा परफोर्मेन्स देना चाहते हैं, इसके लिए उन्हें संतुलित एवं पोषक आहार की ज़रूरत है, ताकि उनका विकास ठीक से हो सके। एक कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक में सभी ज़रूरत विटामिन, मिनरल्स और पोषक तत्व होते हैं, जो आमतौर पर हमारे रोज़मर्रा के आहार से पूरे नहीं हो पाते। डाबर वीटा ऐसी हेल्थ ड्रिंक है जो बढ़ते बच्चों को सभी ज़रूरी पोषक तत्व उपलब्ध कराती है। डाबर के 138 सालों के भरोसे, गुणवत्ता और अनुभव पर आधारित डाबर वीटा 30 आयुर्वेदिक बूस्टर्स के गुणों से भरपूर है। इसमें मौजूद अश्वगंधा, गिलोय, ब्राह्मी और शंखपुष्पी बच्चों की सेहत से जुड़ी 7 ज़रूरतों को पूरा करते हैं जैसे शरीर का विकास, दिमाग का विकास, स्टेमिना और ताकत, मजबूत हड्डियां एवं मांसपेशियां तथा अच्छा डाइजेशन एवं रेस्पीरेटरी हेल्थ। इस तरह यह ड्रिंक बच्चों को स्वस्थ बनाने में मदद करती है। साथ ही इसका स्वादिष्ट चॉकलेटी टेस्ट बच्चों को खूब लुभाता है।'

डॉ नीरव मेहता ने कहा, "संतुलित आहार जैसे फलों, सब्ज़ियों, साबुत अनाज के साथ-साथ अच्छी हेल्थ ड्रिंक बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए बहुत ज़रूरी है। शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए बच्चों को खास मैक्रो, माइक्रो एवं फाइटो (पौधों से मिलने वाले विशे पोषक तत्व) न्यूट्रिएन्ट्स की ज़रूरत होती है। आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर ऐसे ही पोषक तत्व डाबर वीटा को कम्पलीट हेल्थ ड्रिंक बनाते हैं जैसे आंवला और अश्वगंधा इम्युनिटी बढ़ाकर कई बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं, ब्राह्मी और शंखपुष्पी बच्चों की एकाग्रता एवं लर्निंग की क्षमता बढ़ाते हैं। इसी तरह द्रक्षा एंटी-ऑक्सीडेन्ट की तरह काम करता है और रोज़मर्रा में शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाता है।'

'बच्चों के विकास के लिए संतुलित एवं पोषक आहार के महत्व के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए डाबर वीटा ने देश भर की जानी-मानी स्पोर्ट्स एकेडमियों/ विद्यालय के साथ हाथ मिलाया है। इस अभियान के माध्यम से हम बच्चों को सेहतमंद आहार के बारे में शिक्षित करना चाहते हैं, जो उनके शरीर एवं दिमाग के विकास तथा हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए ज़रूरी हैं। इसके अलावा स्टेमिना और अच्छी इम्युनिटी होना भी बच्चों के विकास के लिए बहुत अधिक मायने रखता है।' श्री कुमार ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा.

13 साल के राजवीर पटेल ने बर्थडे पर केक काटने की जगह भिक्षुकों को भोजन कराया

सूरत।

आज की पीढ़ी के लिए बर्थडे सेलिब्रेशन का मतलब है केक काटना, डीजे और डांस पार्टी। सूरत में रहने वाले उत्तर गुजरात के एक अग्रणी के 13 वर्षीय बेटे ने अपना जन्मदिन भव्य तरीके से मनाने के बजाए समाज सेवा कर समाज और खासकर आज की नई पीढ़ी के लिए एक मिसाल पेश की है।

न्यू सिटीलाइट क्षेत्र निवासी और उत्तर गुजरात के अग्रणी जैमिश पटेल (बॉम्बेबाला) और निकिता पटेल (बॉम्बेबाला) का 13 वर्षीय पुत्र राजवीर पटेल, जयमिशभाई जी.डी. गोयनका इंटरनेशनल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता है। 25 मई को राजवीर का जन्मदिन था और माता- पिता दोस्तों के साथ मिलकर केक काटने की तैयारी कर रहे थे। लेकिन इसी बीच राजवीर ने सभी को चौंका दिया। राजवीर ने अपने माता- पिता से कहा कि केक काटने के बजाय वह अपना जन्मदिन किसी समाज सेवा के काम से मनाना चाहता है। ऐसे में राजवीर अपने दोस्तों के साथ केक काटकर जन्मदिन मनाने के बजाए डुमस रोड पर एयरपोर्ट के सामने स्थित साईं बाबा मंदिर पहुंचे और करीब 300 भिक्षुओं को भोजन कराकर भगवान का आशीर्वाद लिया और अपना जन्मदिन मनाया। राजवीर ने कहा कि जन्मदिन के जश्न पर केक काटने, डीजे और डांस पार्टी पर पैसे खर्च करने के बजाए कुछ सामाजिक कार्य करके अपना जन्मदिन मनाने का विचार आया और यह विचार मैंने अपने माता- पिता के समक्ष रखा। अंत में जन्मदिन पर भिक्षुक भोजन करवाया गया।

शॉप्सी ने 2023 की पहली तिमाही में, बिक्री योग्य यूनिटों और विक्रेताओं की संख्या में 3 गुना वृद्धि दर्ज कराते हुए 1.6 करोड़ ग्राहकों तक पहुंचाया लाभ

बेंगलुरु । भारत में सबसे तेज़ी से वृद्धि दर्ज कराने वाले हाइपर-वैल्यू ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म शॉप्सी ने देश भर के अपने लाखों ग्राहकों तक लाभ पहुंचाया है। शॉप्सी के प्लेटफॉर्म पर पिछले एक वर्ष के दौरान बिकने वाली यूनिटों, ग्राहकों और विक्रेताओं की संख्या में 3 गुना तक वृद्धि देखने को मिली है और इसके ऐप्लिकेशन को डाउनलोड करने वालों की संख्या 17.5 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है।

पिछली सिर्फ एक तिमाही के दौरान शॉप्सी ने लास्ट-माइल डिलीवरी क्षमता का विस्तार देशभर के टियर-2 और टियर-3 क्षेत्रों में 350 नए पिन कोडों तक किया है जिनमें कछार, गाज़ीपुर, हमीरपुर, प्रतापगढ़ जैसी जगहें शामिल हैं। शॉप्सी के साथ अपने ई-कॉमर्स सफर की शुरुआत करने वाले ज़्यादातर ग्राहकों में 26 से 45 वर्ष उम्र की महिलाएं शामिल हैं, इनमें देश भर के टियर-2 और टियर-3 शहरों की गृहणियां हैं। मार्च, 2023 में शॉप्सी ऐप्लिकेशन डाउनलोड करने वालों की संख्या 17.5 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई। लेन-देन करने वाले 90 फीसदी नए ग्राहक 35 वर्ष से कम आयुवर्ग से हैं।

फिलहाल, शॉप्सी के करीब 70 फीसदी ग्राहक देश के टियर-2 और टियर-3 इलाकों से आते हैं और फ्लिपकार्ट समूह के पहली बार के ग्राहकों में इसका योगदान 40 फीसदी से ज़्यादा का है। टियर 2 और इससे छोटे शहरों से आने वाले ट्रैफिक में सबसे अहम हिस्सेदारी भारत के युवाओं की होती है। शॉप्सी इन ग्राहकों को अपनी किफायती पेशकशों के साथ ई-कॉमर्स को एक्सप्लोर करने का मौका दे रहा है। शॉप्सी के नए मार्केटिंग अभियान "आज शॉप्सी किया क्या" और इसके शॉपिंग कार्निवल "ग्रैंड शॉप्सी मेला" के दूसरे संस्करण के दम पर इस प्लेटफॉर्म को देश भर के लोग बढ़-चढ़कर इस्तेमाल कर रहे हैं।

कपिल थिरानी, हेड, शॉप्सी, फ्लिपकार्ट ने कहा, "शॉप्सी उभरते हुए भारत की कहानी है, ऐसा देश जो अपने स्मार्टफोन, हाई डेटा स्पीड और तेज़ी से बढ़ती आय का सर्वाधिक इस्तेमाल करना चाहता है। शॉप्सी में हम यह मज़बूत वृद्धि और देश भर के ग्राहकों की बढ़ती हिस्सेदारी देखकर बेहद खुश हैं। शॉप्सी को किफायत चाहने वाले ग्राहकों तक लाभ पहुंचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसके साथ ही, उत्पादों की व्यापक रेंज और भारत के सभी सेवायोग्य पिन कोड तक आसान पहुंच की सुविधा भी उपलब्ध है। यही वजह है कि शॉप्सी देश भर के खरीदारों के साथ-साथ विक्रेताओं के लिए सबसे पसंदीदा शॉपिंग प्लेटफॉर्म बन गया है।"

रुचिका सिंघल, दिल्ली की प्रयाग होज़री की मालिक और शॉप्सी विक्रेता ने कहा, "ई-कॉमर्स उभरते हुए उद्यमियों के लिए वरदान की तरह है क्योंकि इसमें कम से कम निवेश करना होता है और काम के घंटों से जुड़ा कोई बंधन नहीं होता है। अपना पहला बच्चा होने के बाद मैंने अपने कारोबार की शुरुआत पुरुषों के फैशन से की। बिना किसी परेशानी के काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन साधने के साथ-साथ शॉप्सी पर हमारे कारोबार का अब तक का सफर बहुत ही शानदार रहा है।"

प्लेयर्ज़पॉट ने ब्रांड एंबेसडर रश्मिका मंदाना के साथ एक नया अभियान #TalentKiValue लॉन्च किया

नेशनल । जैसे ही आईपीएल सीजन करीब आ रहा है, भारत के सबसे लोकप्रिय ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म प्लेयर्ज़पॉट ने फेंटसी गेमिंग प्रशंसकों के उत्साह और जुनून को पकड़ने के लिए सुपरस्टार रश्मिका मंदाना के साथ #TalentKiValue नाम से एक अभियान शुरू किया है। दिवा और उनके प्रशंसकों के बीच मजबूत संबंध का लाभ उठाते हुए आकर्षक डिजिटल फिल्मों की एक श्रृंखला के माध्यम से, अभियान का उद्देश्य लगभग हर भारतीय घर में सुपर प्रतिभाशाली इनडोर गेमर्स को सक्षम बनाना है।

यूथ आइकॉन रश्मिका मंदाना दक्षिण भारतीय सिनेमा के सबसे प्रभावशाली सितारों की फोर्ब्स 2021 की सूची में सबसे ऊपर हैं। जबकि वह एक शौकीन चावला गेमर है और अंतरराष्ट्रीय खेल प्लेटफार्मों पर अपनी उपस्थिति स्थापित कर चुका है, उसने एक के बाद एक सुपरहिट फिल्में दी हैं। उनका आकर्षक व्यक्तित्व इस रोमांचक अभियान के माध्यम से एक सीधा संबंध स्थापित करेगा, जो हर भारतीय घर में इनडोर गेमिंग चैंपियन को उनके पसंदीदा खेलों को फिर से पेश करके और उन्हें प्लेयर्ज़पॉट प्लेटफॉर्म पर पहचानने के लिए प्रेरित करेगा। अभियान को विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म और ओटीटी पर प्रसारित किया जाएगा।

अभियान में रश्मिका मंदाना को एक सेलिब्रिटी गेमर के रूप में दिखाया गया है और अब यह प्लेयर्ज़पॉट पर हर इनडोर गेम विशेषज्ञ की ताकत को बढ़ावा देगा और पहचानेगा।चूंकि हमारे देश में गेमिंग को अभी भी एक शौक माना जाता है, #TalentKiValue प्रतियोगिताओं और खेलों की एक श्रृंखला के माध्यम से अपने खिलाड़ियों की प्रतिभा की सराहना करता है और उन्हें रोमांचक पुरस्कार जीतने का मौका देता है। मूल विचार देश में गेमर्स की मांग को बढ़ाना है, जो #TalentKiValue है।

अभियान के शुभारंभ पर, प्लेयर्ज़पॉट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सुनील यादव ने कहा, "कौशल-आधारित गेमिंग सबसे बड़ी गेमिंग श्रेणियों में से एक है, जो सभी आयु समूहों में देश की पसंद तय करती है। हालाँकि, बड़ा भारतीय गेमिंग समुदाय अभी भी कौशल-आधारित आकस्मिक खेलों से एक व्यवहार्य कैरियर बनाने के पीछे है, वह भी मोबाइल प्रारूप में। प्लेयर्ज़पॉट के साथ, मोबाइल गेमिंग रचनाकारों और खिलाड़ियों के लिए गंभीर है और रश्मिका की सम्मोहक ऑन-स्क्रीन अपील और राष्ट्रीय लोकप्रियता हमारे ऐप पर विभिन्न प्रकार के गेम खेलने वाले खिलाड़ियों के लिए गेम-चेंजर होगी। फैंटेसी गेमिंग सेगमेंट में जबरदस्त सफलता के बाद हम कौशल आधारित सेगमेंट में अग्रणी होने को लेकर आश्वस्त हैं, खासकर टीयर 2 और टीयर 3 शहरों में।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)